नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 362, नई दिल्ली, सोमवार 02 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

क्त की कदर करो, क्योंकि एक बार गया हुआ वक्त लौटकर नहीं आता।

03 स्त्री श्रृंगार सजावट या परंपरा

06 भाषा अंतरालः शब्दों को जोड़ना, दुनिया को जोड़ना ऑक्सीजन कैसे बना

08 झारखंड के सारंडा में आईईडी ब्लास्ट, कोबरा कमांडेन्ट अजय मल्लिक घायल

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh

आरएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित समाचार पत्र "परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

दिनांकः- 29 मार्च , स्थानः- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, समयः- 1 बजे से 5 बजे

परिवहन विशेष : हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है
इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रूप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

मुख्य विशेषता :

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़को पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" " समर्पित एवं पूर्ण रूप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) -
वैष्णवी फाउंडेशन एवं द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सौजन्य से

-"पूर्णता निःशुल्क, कोई रजिस्ट्रेशन फीस नहीं, स्वास्थ्य जाँच शिविर
" आपकी तंदुरुस्ती हमारा ध्येय",
टोलवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित पूर्णतः निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

* वैष्णवी फाउंडेशन के सहयोग द्वारा
1. आंखों की जांच, 2. रक्तचाप, 3. मधुमेह जांच,4. मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ
5. भारतीय लेंस की सुविधा
* द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सहयोग द्वारा
6. बीपी, 7. शुगर, 8. कोलेस्ट्रॉल, 9. हड्डियों का घनत्व,
इस जांच शिविर मे ऊपरलिखित सभी जांच पूरी तरह से निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
इस जांच शिविर में निम्नलिखित अनुभवी एवं विशेषज्ञ डॉक्टर्स एवम्-अन्य की निगरानी में जांच,
वैष्णवी फाउंडेशन
1. डॉ मनोज कुमार दुबे,
2. रिशु भारद्वाज, एवं
3. विकास राय द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल चिकित्सक
4. जगदीश

जांच शिविर : दिनांक: 15 मार्च (रविवार) 2026
स्थान: गुरुद्वारा सिंह सभा, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव, दिल्ली ।।0027।
समय: 10:00 AM to 02:00 PM

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में समय पर पधारें तथा अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को भी साथ लेकर आएँ और इस अवसर का लाभ उठाएँ।

विशेष जानकारी मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ भारतीय लेंस की सुविधा के लिए मरीज को अपने खर्चे पर * बालाजी हॉस्पिटल * लायन्स हॉस्पिटल पहुंचना पड़ेगा, पर सर्जरी और भारतीय लेंस निशुल्क रहेगा।

स्वस्थ रहें, जागरूक रहें। आपकी सेहत – हमारी प्राथमिकता।

निवेदक :-
संजय कुमार बाठला, राष्ट्रीय अध्यक्ष
पिंकी कुंडू, महासचिव
केके छाबड़ा उपाध्यक्ष
सुनीता शर्मा सचिव
अभिषेक राजपूत सचिव

रीडर्स से चलने वाला मीडिया ही सच्चा स्वतंत्र, सरकारी सहायता पर निर्भर कॉर्पोरेट मीडिया नहीं: जस्टिस नागरत्ना

संजय कुमार बाठला

सुप्रीम कोर्ट की जज जस्टिस बीवी नागरत्ना ने गुरुवार को नई दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित इंटरनेशनल प्रेस इंस्टीट्यूट (आईपीआई) इंडिया अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस इन जर्नलिज्म 2025 समारोह में मुख्य भाषण देते हुए प्रेस की स्वतंत्रता पर गहन चिंता व्यक्त की। उन्होंने रीडर्स के सब्सक्रिप्शन पर चलने वाले मीडिया को सबसे मजबूत बताया, जबकि कॉर्पोरेट स्वामित्व वाले मीडिया को सरकारी आर्थिक सहायता के कारण राजनीतिक दबाव के प्रति कमजोर माना।

रीडर्स सपोर्ट से मजबूत स्वतंत्र पत्रकारिता जस्टिस नागरत्ना ने जोर देकर कहा कि स्वतंत्र पत्रकारिता तभी जीवित रह सकती है जब उसे पाठकों और सिविल सोसाइटी का प्रत्यक्ष समर्थन मिले। रीडर्स से चलने वाला प्रेस हमेशा जनहित की सेवा करने और राजनीतिक दबाव से बचने के लिए बेहतर स्थिति में होता है। उन्होंने इंडिपेंडेंट रिपोर्टिंग को पब्लिक गुड करार देते हुए सब्सक्रिप्शन मॉडल को इसका मजबूत आधार बताया।

कॉर्पोरेट मीडिया पर आर्थिक दबाव का खतरा कॉर्पोरेट मालिकाना हक वाला मीडिया औपचारिक रूप से स्वतंत्र हो सकता है, लेकिन आर्थिक निर्भरता और राजनीतिक संबंधों से बंधा रहता है। जस्टिस नागरत्ना ने चेतावनी दी कि प्रेस राज्य से आजाद हो सकता है, लेकिन कॉर्पोरेट पावर राज्य के समर्थन पर निर्भर हो सकती है। संपादकीय स्वतंत्रता पर स्वामित्व हितों और वित्तीय निर्भरता का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

अनुच्छेद 19(2) से ज्यादा खतरा 19(6) के आर्थिक दबावों से प्रेस स्वतंत्रता का सबसे बड़ा खतरा संविधान के अनुच्छेद 19(2) के सीधे प्रतिबंधों से नहीं, बल्कि 19(6) के तहत वैध आर्थिक व नियामकीय

दबावों से है। स्वामित्व नियम, लाइसेंसिंग, कर नीति, विज्ञापन प्रणाली और एंटीट्रस्ट कानून संपादकीय विकल्पों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकते हैं। कानून प्रेस को चुप नहीं करा सकता, लेकिन अभिव्यक्ति की शर्तें तय कर सकता है।

मुख्य बिंदुः

सरकारी विज्ञापन का प्रभावः एडिटर महत्वपूर्ण रिपोर्टिंग के जोखिम को समझते हैं, जहां राजस्व दांव पर लगता है।

बाजार निर्भरता का सवालः यदि प्रेस की आजादी आर्थिक लाभ पर निर्भर है, तो क्या वह वास्तव में स्वतंत्र है?

चुनिंदा पत्रकारिता का विरोधः प्रेस पर कब्जे की कोशिशों में आर्थिक के साथ राजनीतिक मंसूबे भी हैं।

ग्राउंड रिपोर्टिंग की सराहना और संवैधानिक महत्व रिपोर्टर वैष्णवी राठौर को ग्रेट निकोबार द्वीप विकास परियोजना पर उनकी ग्राउंड रिपोर्ट के लिए प्रदान किया गया अवार्ड। जस्टिस नागरत्ना ने पर्यावरण और जलवायु जोखिमों पर ऐसी रिपोर्टिंग को संवैधानिक मूल्यों को जीवंत बनाने वाला बताया।

प्रेस स्वतंत्रता अनुच्छेद 19(1)(a) और 19(1)(g) से उपजती है, लेकिन सामाजिक समर्थन के बिना अधर में लटकती है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचारः क्यों न क्लिक करें किसी लिंक पर?

पिंकी कुंडू

(लिंक पर क्लिक करने के जोखिम (असत्यापित एवं ज्ञातस्रोतों से)

- असत्यापित स्रोतः मैलवेयर, फ़िशिंग, पासवर्ड चोरी, डिवाइस हैक।

- ज्ञात स्रोतः हैक किए गए अकाउंट, समझौता किए गए वेबसाइट, हानिकारक विज्ञापन, उन्नत फ़िशिंग।

भरोसेमंद दिखने वाले लिंक भी हथियार बनाए जा सकते हैं।

अतिरिक्त तकनीकी खतरे

1. GET रिक्वेस्ट्स (URLs में)

- संवेदनशील डेटा का खुलासाः HTTP GET मेथड में पैरामीटर (जैसे यूज़रनेम, टोकन, सर्चक्वेरी) सीधे URL में जुड़ जाते हैं।

*उदाहरणः

https://example.com/login?user=raman&password=1234

यह डेटाः

- ब्राउज़र हिस्ट्री में लॉग हो सकता है।
- सर्वर लॉग में सेव हो सकता है।
- URL फ़ॉरवर्ड करने पर साझा हो सकता है।
- यदि सुरक्षित न हो तो सर्च इंजन द्वारा इंडेक्स किया जा सकता है।

- सेशन हाईजैकिंगः GET URL में सेशन आईडी कैप्चर कर हमलावर अनधिकृत एक्सेस पा सकते हैं।

- आसान इंटरसेप्शनः GET पैरामीटर साधारण टेक्स्ट में दिखते हैं, जबकि POST रिक्वेस्ट डेटा को बॉडी में सुरक्षित रखती है।

2. IP एड्रेस का खुलासा

- ट्रैकिंग एवं प्रोफाइलिंगः लिंक पर क्लिक करने से आपका IP एड्रेस गंतव्य सर्वर को दिखता है, जिससे लोकेशन, ISP और ब्राउज़िंग आदतें पता लग सकती हैं।

- लक्षित हमलेः हमलावर IP डेटा का उपयोग DoS अटैक या कमजोरियों की जांच के लिए कर सकते हैं।

- पहचान से जुड़ावः कुकीज़ या लॉगिन डेटा के साथ IP मिलाकर विस्तृत यूज़र प्रोफ़ाइल बनाई जा सकती है।

- कानूनी/फॉरेंसिक जोखिमः IP लॉग्स को कानूनी आदेश पर जब्त किया जा सकता है या निगरानी में दुरुपयोग हो सकता है।

***सुरक्षा उपाय असुरक्षित लिंक से बचावः**

- क्लिक करने से पहले URL पर होवर करके देखें।
- एम्बेडेड लिंक की बजाय आधिकारिक ऐप/साइट का उपयोग करें।
- प्रेषक की पहचान अन्य माध्यम से सत्यापित करें।
- हर लिंक को संदिग्ध मानें जब तक पुष्टि न हो।

***GET रिक्वेस्ट से बचावः**

- URL में संवेदनशील डेटा साझा न करें।
- फ़ॉर्म और लॉगिन के लिए POST रिक्वेस्ट का उपयोग करें।
- HTTPS लागू करें ताकि ट्रैफ़िक एन्क्रिप्ट हो।
- सर्वर को इस तरह कॉन्फ़िगर करें कि संवेदनशील क्वेरी स्ट्रिंग लॉग न हों।
- यूज़र्स को शिक्षित करें कि क्रेडेंशियल वाले URL कॉपी/फ़ॉरवर्ड न करें।

***IP खुलासे से बचावः**

- VPN या प्रॉक्सी का उपयोग करें ताकि असली IP छिपा रहे।
- फ़ायरवॉल नियम सक्षम करें ताकि अनचाहे ट्रैफ़िक ब्लॉक हों।
- ब्राउज़र को ट्रैकिंग सीमित करने के लिए कॉन्फ़िगर करें (WebRTC लीक रोकें, प्राइवेसी एक्सटेंशन लगाएँ)।
- संस्थाएँ सुरक्षित गेटवे लागू करें जो आउटबाउंड ट्रैफ़िक को गुमनाम करें।

मुख्य संदेश लिंक पर क्लिक करना कभी भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं होता। फ़िशिंग और मैलवेयर से आगे, GET पैरामीटर और IP खुलासा जैसी तकनीकी कमजोरियाँ चुपचाप आपकी प्राइवेसी और सुरक्षा को खतरे में डाल सकती हैं। सबसे सुरक्षित तरीका हैः ज़ीरो-ट्रस्ट सत्यापन, एन्क्रिप्टेड संचार और गुमनामी उपकरणों का उपयोग।

होली के जिद्दी रंग छुड़ाने के घरेलू उपाय : शहनाज़ हुसैन

रंगों से खेलना किसे नहीं पसंद होता। फिर जब मौका होली का हो, तो कौन ही किसी को रंग लगाने से चूकता है। लेकिन दिक्कत तो होली खेलने के बाद शुरू होती है, जब रंग छुड़ाने में छक्के छूट जाते हैं /

रंगों के बिना होली की कल्पना बहुत ही नीरस हो जाती है/

होली के मौके पर शाम को नए कपड़े पहनने का भी रिवाज है और शाम को घर आए मेहमानों के साथ भी गुलाल से थोड़ी.बहुत होली खेली ही जाती है। इस चक्कर में कई बार नए कपड़े भी रंग जाते हैं/

अगर आपकी त्वचा या कपड़ों पर होली का पक्का रंग लग जाये तो इसे छुड़ाने के लिए ज्यादा परेशान न हों। कुछ आसान तरीके अपनाकर आप इन रंगों को छुड़ा सकते हैं।

सरसों के तेल से पहले ही तैयारी कर लें

जब भी रंग खेलने के लिए निकलें, तो अपने बालों, चेहरे, हाथों और बाकी शरीर पर सरसों का तेल अच्छे से लगा लें। यह आपको चिपचिपा लग सकता हैए लेकिन रंग खेलने के लिए ज़रूरी है। सरसों का तेल लगाने से रंग आपकी त्वचा से बहुत ज़्यादा चिपकता नहीं है। फिर जब आप नहाते हैं तो सरसों के तेल की वजह से रंग अपेक्षाकृत जल्दी छूट जाता है।

सबसे पहले ध्यान दीजिये की रंग निकालने में गर्म पानी का उपयोग मत कीजिए

बल्कि ठंडे पानी का इस्तेमाल बेहतर होगा क्योंकि होली के रंग चेमिकल्स से बने होते हैं और गर्म पानी से

चेमिकल्स में रिएशन हो सकता है।

होली के बाद अगर आप खुद को रंग छुड़ाने की मशकत से बचाना चाहते हैं तो आपको होली के पहले से तयारी करना होगी/

1 ---खीरा -------रंगों को छुड़ाने के लिए खीरे का प्रयोग भी लाभदायक साबित होता है / खीरे का रस निकालकर उसमें थोड़ा सा गुलाब जल और एक चम्मच सिरका मिलाकर पेस्ट तैयार करें/

इससे मुंह धोने से चेहरे के जिद्दी रंग छूट जाएंगे और त्वचा में निखार भी आ जाएगा /

2 ---मूली ------होली के रंग छुड़ाने में मूली काफी कारगर साबित हो सकती है / मूली का रश निकाल कर उसमे दूध, बेसन या मैदा मिलाकर पेस्ट बना कर चेहरे, हाथों या गर्दन आदि पर पर हल्के हाथ से स्क्रब करें । कुछ देर इसे ऐसे ही लगा रहने दें/

3 ---बेकिंग सोडा -----होली के रंग छुड़ाने में बेकिंग सोडा भी मददगार सावित हो सकता है / इसके लिए एक बाल्टी में गर्म पानी में थोड़ा बेकिंग सोडा डालें। फिर इसमें होली के रंग से खराब कपड़ों को डालकर एक या डेढ़ घंटे के लिए छोड़ दें। इसके बाद पानी से कपड़ों को निकालकर साबुन से मलमल कर साफ करें तो होली का रंग निकल जाएगा /

4 ---नींबू---- नींबू नेचुरल ब्लीचिंग एजेंट है/

होली में कपड़ों पर लगे छोटे.मोटे रंगों के दाग को

निकालने के लिए नींबू का रस इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए नींबू का रस निकालें और उसे अपने कपड़ों पर अच्छी तरह से लगा दें। थोड़ी देर बाद इन कपड़ों को गर्म पानी से धो लें/ काफी हद तक रंग निकल जाता है। पक्के रंगों को निकालने में शायद नींबू काम न आए/ तो इसमें अपना समय न गवाएं। त्वचा से रंगों को निकालने के लिए नींबू को अपनी त्वचा पर धीरे धीरे रगड़ियें और 15 मिनट के लिए छोड़ दीजिए और फिर ढेर सारा मॉइश्चराइज़र लगाइए। मॉइश्चराइज़र की जगह क्लींज़र का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। फिर केमिकल रहित साबुन और गुनगुने पानी से नहा लीजिए। रंग आसानी से छूट जाएगा

5 --एलोवेरा जेल------ -- त्वचा और बालों से होली का रंग छुड़ाने के लिए भी आप एलोवेरा जेल का उपयोग कर सकते हैं / इसके लिए आपको एलोवेरा जेल को अपनी पूरी त्वचा पर लगाना है। इसका इस्तेमाल आप बालों में भी कर सकते हैं। इसे लगाने के आधा घण्टा बाद इसे साफ ताजे पानी से धो डालिये / इससे होली का पक्का रंग आपकी त्वचा से हट जाएगा/

6 ----दही------- एक कटोरी में दही लेकर उसमें थोड़ी सी हल्दी मिलाकर बने पेस्ट को हलके हाथों से त्वचा पर लगाएं और आधा घण्टा बाद गुनगुने पानी से धो डालने से केमिकल युक्त रंगों का असर कम हो जायेगा /

होली के रंगों का बालों पर काफी दिनों तक असर देखने को मिलता है और बाल पूरी तरह बदरंग नज़र आते हैं / । इसके लिए दही और बेसन को मिलाकर पेस्ट बनाइए और इसे बालों में लगाइए। इसे करीब आधे घंटे तक लगा रहने दीजिए और फिर बाल धो लीजिए। अगर फिर रंग पूरी तरह नहीं छूटता हैए तो इस बार आप बेसन की जगह दही में नींबू मिलाकर बालों में लगा सकते हैं। इसके बाद तो बालों से रंग छूट ही जाएगा।

लेखिका अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेज्ञ है और हर्बल क्वीन के नाम से लोकप्रिय है

रात को सोने का तरीका

पिंकी कुंडू

जब आप बाईं करवट सोते हैं, तो आपके पेट की बनावट और गुरुत्वाकर्षण मिलकर एसिड को नीचे ही रखते हैं। पेट हमारे शरीर में थोड़ा बाईं तरफ झुका होता है, इसलिए इस पोज़िशन में पेट का एसिड ऊपर ग्रासनली में वापस नहीं जाता। यही वजह है कि एसिडिटी, जलन और हार्टबर्न कम हो जाते हैं।

साइंस बताती है कि दाईं करवट सोने पर एसिड को ऊपर जाने का रास्ता मिल जाता है, जिससे रिफ्लक्स की समस्या बढ़ सकती है। लेकिन बाईं करवट सोने पर पाचन बेहतर होता है, पेट जल्दी खाली होता है और नींद भी गहरी आती है।

इसी कारण डॉक्टर GERD, अपच और एसिडिटी वाले लोगों को बाईं करवट सोने की सलाह देते हैं। एक छोटा सा बदलाव, लेकिन असर पूरी रात और पूरे शरीर पर पड़ता है।

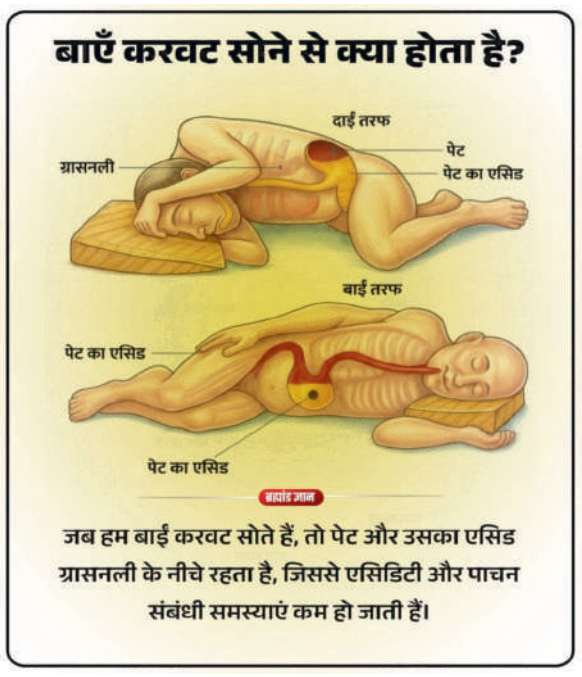

भारतीय परंपरा और चोटी (केश-गुंफन) का विज्ञान

पिंकी कुंडू

क्या आपने कभी सोचा है कि हमारी दादी-नानी हमेशा बालों को बांधकर या चोटी बनाकर रखने पर इतना जोर क्यों देती थीं? यह केवल सुंदरता की बात नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहरा आयुर्वेदिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है

इस चित्र के माध्यम से समझिए कि 'चोटी' रखना हमारे स्वास्थ्य के लिए कैसे लाभकारी है

मस्तिष्क की शांति: बालों को व्यवस्थित रखने से सिर के मुख्य ऊर्जा केंद्रों पर दबाव बना रहता है, जो एकाग्रता Concentration बढ़ाने में मदद करता है

रीढ़ की हड्डी का संतुलन: चोटी का वजन और उसकी बनावट गर्दन और रीढ़ की हड्डी को एक सीध में रखने के लिए एक प्राकृतिक संकेत का काम करती है

ऊर्जा का संरक्षण: प्राचीन मान्यताओं के अनुसार, बालों को खुला छोड़ने के बजाय बांधकर रखने से शरीर की सकारात्मक ऊर्जा का क्षय नहीं होता और प्रवाह सही बना रहता है

बालों की मजबूती: यह तो हम सभी जानते हैं कि चोटी बनाने से बाल उलझते कम हैं जिससे वे टूटने से बचते हैं और उनकी मजबूती बनी रहती है

हमारी परंपराएं केवल रीति-रिवाज नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन जीने का एक मार्ग हैं। अपनी जड़ों की ओर लौटें।

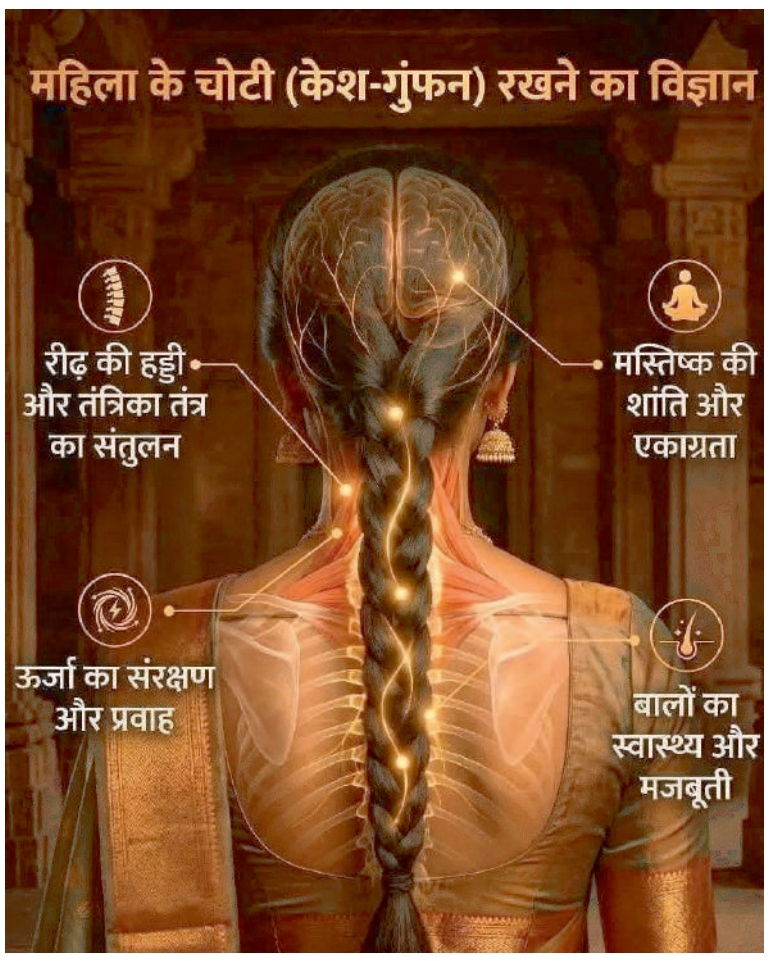

इंसान के स्वभाव और बीमारियों के बीच क्या रिश्ता है?

पिंकी कुंडू

आपकी बुद्धि यह नहीं मानती की यहीं से सारी बीमारियाँ शुरू होती हैं। आप अपने साथ सात जन्मों की गांठें लाए हैं। आप ज़िंदगी की सारी बीमारियों का दोष योग, प्राणायाम, मेडिटेशन से दे सकते हैं, लेकिन आज आप इसे नहीं मानते। यह आपमें सबसे बड़ी गलती है।

सारी चीज़ें आपके मन में हैं। आपके मन ने कुछ तय कर लिया है। आपके लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है।

तो अब आइए जानते हैं कि मन, भावनाएँ, विचार, स्वभाव कैसे और कहाँ प्रभावित होते हैं.

1. अहंकार हड्डियों में अकड़न पैदा करता है।

2. अपनी ख्वाहिशें पूरी करने की आदत से पेट की बीमारियां होती हैं।

3. बहुत ज़्यादा गुस्सा और चिड़चिड़ापन लिवर और गॉल ब्लैडर को नुकसान पहुंचाता है।

4. बहुत ज़्यादा स्ट्रेस और एंग्जायटी पैंक्रियास को नुकसान पहुंचाती है।

5. डर किडनी और ब्लैडर को नुकसान पहुंचाता है।

6. दिखावटी रवैये से गले और फेफड़ों की बीमारियां होती हैं।

7. हमारा असली रूप/मैं यही कहूंगा, ऐसी ज़िद कब्ज़ का कारण बनती है।

8. दुख को दबाने से फेफड़ों और बड़ी आंतों की क्षमता कम हो जाती है।

9. एंग्जायटी, ओवरएक्साइटमेंट, जल्दबाजी और झगड़ा जैसी आदतें दिल और छोटी आंतों को नुकसान पहुंचाती हैं।

10. मतलबी लोगों को सबसे ज़्यादा बीमारियां होती हैं क्योंकि वे देना नहीं चाहते, इसलिए शरीर में मौजूद फालतू मेटल ठीक से बाहर नहीं निकल पाते और बीमारियां होती हैं।

11. प्यार/स्नेह मन और शरीर को शांति और संतुष्टि देकर ताकत देता है।

12. एक मुस्कान न सिर्फ आपको बल्कि दूसरों को खुश करता है।

13. अगर आप हंसते रहेंगे, तो स्ट्रेस कम होता है।

तो अब अपने गुस्से, विचारों, भावनाओं, ईगो, सेल्फिशनेस को कंट्रोल करने की कोशिश करें। हंसना, खेलना, खुश रहना, संतुष्ट रहना, खुश रहना, संतुष्ट रहना मतलब आप हेल्दी और फिट हो जाएंगे।

नसों की कमजोरी, थकान और स्टैमिना के लिए सलाम मिश्री का पारंपरिक नुस्खा.....

पिंकी कुंडू

अगर जल्दी थकान महसूस होती है, शरीर में कमजोरी रहती है, स्टैमिना कम है या उम्र बढ़ने के साथ ऊर्जा घट रही है, तो आयुर्वेद में सलाम मिश्री को बलवर्धक और ताकत बढ़ाने वाला माना गया है। इसे विशेष रूप से पुरुषों की शक्ति और नसों की मजबूती के लिए उपयोग किया जाता है।

सलाम मिश्री क्यों लाभकारी मानी जाती है

1. शरीर को प्राकृतिक ऊर्जा देने में सहायक

2. नसों की मजबूती में सहयोग

3. स्टैमिना बढ़ाने में मदद

4. कमजोरी और थकान कम करने में सहायक

5. प्रजनन शक्ति को सपोर्ट

संभावित फायदे

1. शरीर में ताकत और स्फूर्ति

2. लंबे समय तक काम करने की क्षमता

3. कमजोरी में सुधार

4. मांसपेशियों को पोषण

5. उम्र के साथ घटती ऊर्जा में सहयोग

सेवन करने का सही तरीका

1. छोटा चम्मच सलाम मिश्री पाउडर लें

2. 1 गिलास गुनगुने दूध में मिलाएं

3. रात को सोने से पहले सेवन करें

4. 30–40 दिन नियमित लें

* और बेहतर परिणाम के लिए

5. दूध में 1–2 केसर के धागे मिल सकते हैं

6. संतुलित आहार लें (सूखे मेवे, दालें, हरी सब्जियां)

7. रोज हल्की एक्सरसाइज करें

8. पर्याप्त नींद लें

9. तनाव कम रखें

सावधानियां

1. डायबिटीज के मरीज सावधानी बरतें

2. अधिक मात्रा में सेवन ना करें

3. हाई ब्लड प्रेशर या हार्मोनल समस्या हो तो डॉक्टर से पूछें

4. किसी भी प्रकार की पुरानी बीमारी में पहले चिकित्सकीय सलाह लें

नोट: ताकत और स्टैमिना बढ़ाने के लिए केवल घरेलू नुस्खे पर्याप्त नहीं होते। सही आहार, व्यायाम और जीवनशैली सुधार बेहद जरूरी है। लगातार कमजोरी हो तो चिकित्सकीय जांच अवश्य कराएं।

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

राशि के प्रकार और सूर्य राशि, चंद्र राशि तथा नाम राशि में अंतर:

ज्योतिष शास्त्र यह अध्ययन करता है कि जन्म के समय सूर्य, चंद्रमा और ग्रहों की स्थिति व्यक्ति के जीवन और स्वभाव को कैसे प्रभावित करती है।

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
09599101326, 07303855446

ज्योतिष का आधार है – राशि चक्र (Zodiac)।

1 राशि चक्र क्या है?

राशि चक्र आकाश का एक काल्पनिक बेल्ट (घेरा) है, जिसे 360 में बाँटा गया है।

इसे 12 समान भागों में विभाजित किया गया है, और प्रत्येक भाग को एक राशि कहा जाता है।

हर राशि 30 की होती है।

2 12 राशियाँ और उनके स्वामी ग्रह:

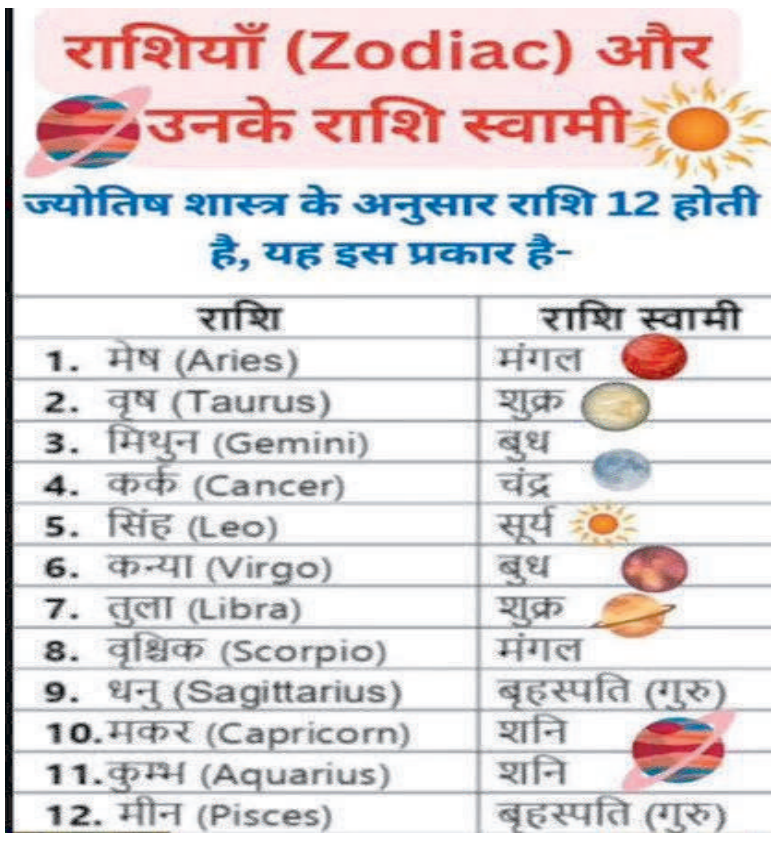

3. राशि चक्र के कितने प्रकार होते हैं?

मुख्य रूप से तीन प्रकार की राशि प्रणालियाँ प्रचलित हैं:

सूर्य राशि

चंद्र राशि

नाम राशि

***सूर्य राशि क्या है?**

आपकी सूर्य राशि (Sun Sign) वह राशि है जिसमें जन्म के समय सूर्य स्थित था।

सूर्य दर्शाता है:

आत्मा

अहं (Ego)

आत्मविश्वास

नेतृत्व क्षमता

जीवन का उद्देश्य

सूर्य राशि बताती है कि आप बाहर से कैसे दिखाई देते हैं और जीवन में क्या बनना चाहते हैं।

पश्चिमी ज्योतिष मुख्यत: सूर्य राशि पर आधारित है।

***चंद्र राशि क्या है?**

आपकी चंद्र राशि (Moon Sign) वह राशि है जिसमें जन्म के समय चंद्रमा स्थित था।

चंद्रमा दर्शाता है:

मन

भावनाएँ

मानसिक स्थिति

आंतरिक स्वभाव

संवेदनशीलता

चंद्रमा लगभग 2 से 2.5 दिन में राशि बदलता है, इसलिए यह अधिक व्यक्तिगत और गहराई से जुड़ा होता है।

वैदिक ज्योतिष में चंद्र राशि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

***नाम राशि क्या है?**

नाम राशि आपके नाम के पहले अक्षर या ध्वनि से निर्धारित होती है।

भारतीय परंपरा में:

जन्म नक्षत्र के अनुसार नाम रखा जाता है।

हर नक्षत्र के लिए कुछ विशेष अक्षर निर्धारित होते हैं।

उसी अक्षर से संबंधित राशि को नाम राशि कहते हैं।

नाम राशि दर्शाती है:

सामाजिक पहचान

सार्वजनिक प्रभाव

ध्वनि की ऊर्जा

***सूर्य राशि, चंद्र राशि और नाम राशि में अंतर:**

आधार	सूर्य राशि	चंद्र राशि	नाम राशि
निर्धारण	सूर्य की स्थिति	चंद्रमा की स्थिति	नाम के पहले अक्षर से
दर्शाती है	आत्मा और व्यक्तित्व	मन और भावनाएँ	सामाजिक पहचान
अधिक उपयोग	पश्चिमी ज्योतिष	वैदिक ज्योतिष	पारंपरिक नामकरण
महत्व (वैदिक में)	मध्यम	बहुत अधिक	सहायक

***वैदिक ज्योतिष में चंद्र राशि अधिक महत्वपूर्ण क्यों है?**

क्योंकि:

चंद्रमा मन का स्वामी है।

मन कर्मों को नियंत्रित करता है।

दशाएँ (जैसे विम्शोत्तरी दशा) चंद्र नक्षत्र से शुरू होती हैं।

गोचर का प्रभाव चंद्र राशि से देखा जाता है।

इसलिए वैदिक ज्योतिष में चंद्र राशि को विशेष महत्व दिया जाता है।

***लग्न (Ascendant) क्या है?**

लग्न वह राशि है जो जन्म के समय पूर्व दिशा में उदित हो रही थी।

यह लगभग हर 2 घंटे में बदल जाती है।

लग्न दर्शाता है:

शरीर

जीवन मार्ग

स्वास्थ्य

बाहरी व्यक्तित्व

वैदिक ज्योतिष में महत्व का क्रम है:

लग्न > चंद्र राशि > सूर्य राशि

*तीनों अलग क्यों हो सकते हैं?

सूर्य लगभग 30 दिन में राशि बदलता है।

चंद्रमा 2–2.5 दिन में राशि बदलता है।

लग्न लगभग 2 घंटे में बदलता है।

इसलिए संभव है कि किसी व्यक्ति की:

सूर्य राशि मेष हो

चंद्र राशि कर्क हो

लग्न कन्या हो

इसलिए केवल सूर्य राशि देखकर पूर्ण भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

*अंतिम निष्कर्ष

ज्योतिष में:

12 राशियाँ होती हैं

सूर्य राशि – बाहरी व्यक्तित्व

चंद्र राशि – मन और भावनाएँ

नाम राशि – सामाजिक पहचान

लग्न – जीवन की दिशा

किसी भी व्यक्ति को पूर्ण रूप से समझने के लिए इन सभी का संयुक्त अध्ययन आवश्यक है।

अंततः, राशि चक्र केवल 12 राशियों का समूह नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन और व्यक्तित्व की बहुस्तरीय संरचना को समझाने वाली एक संपूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था है।

सूर्य राशि आपके बाहरी व्यक्तित्व, आत्मबल और जीवन के उद्देश्य को दर्शाती है।

चंद्र राशि आपके मन, भावनाओं और आंतरिक स्वभाव को प्रकट करती है।

लग्न (Ascendant) आपके जीवन मार्ग, व्यवहार और वास्तविक अनुभवों को आकार देता है।

नाम राशि आपकी सामाजिक पहचान और ध्वनि ऊर्जा को प्रभावित करती है।

किसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से समझने के लिए केवल एक राशि पर्याप्त नहीं होती। जब इन सभी तत्वों का संयुक्त अध्ययन किया जाता है, तब व्यक्ति का बाहरी, आंतरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्वरूप स्पष्ट होता है। इस प्रकार ज्योतिष केवल भविष्य बताने का साधन नहीं, बल्कि जीवन की गहन संरचना को समझने का विज्ञान है।

स्त्री श्रृंगार सजावट या परंपरा

पिंकी कुंडू

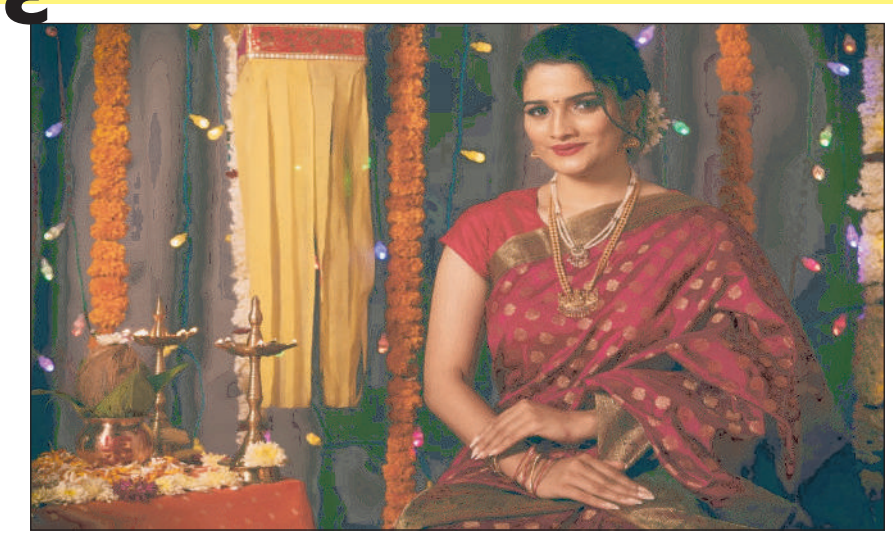

स्त्री के लिए श्रृंगार केवल बाहरी सजावट नहीं रहा है, बल्कि भारतीय परंपरा में यह एक गहरे भावात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक अर्थ से जुड़ा हुआ रहा है। पहले के समय में स्त्री का श्रृंगार मुख्यतः अपने पति के लिए होता था। यह आकर्षण या दिखावे का विषय नहीं था, बल्कि दांपत्य संबंधों की ऊष्मा, प्रेम और निकटता को बनाए रखने का एक स्वाभाविक माध्यम था।

श्रृंगार के माध्यम से स्त्री अपने पति के प्रति अपनत्व, समर्पण और अनुराग को व्यक्त करती थी। इससे पति का मन घर, परिवार और पत्नी के साथ अधिक जुड़ा रहता था। घर का वातावरण सौम्य, शांत और संतुलित बना रहता था, क्योंकि स्त्री स्वयं प्रसन्न होती थी और उसकी प्रसन्नता पूरे परिवार में फैलती थी।

उस समय श्रृंगार समाज को दिखाने के लिए नहीं, बल्कि संबंधों को जीवित और सजीव रखने के लिए होता था। घर के भीतर स्त्री सजी-संवरी रहती थी, क्योंकि वहीं उसका संसार था, वहीं उसका प्रेम, उसका अधिकार और उसकी गरिमा थी। पति के सामने स्वयं को सुंदर बनाना कोई मजबूरी नहीं, बल्कि एक सहज आनंद था। श्रृंगार को प्रेम की भाषा माना जाता था, जिसमें शब्दों की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

आज का समय इससे बिल्कुल उलट दिखाई देता है। अब श्रृंगार का केंद्र घर नहीं, बल्कि बाहरी संसार बन गया है। घर के भीतर स्त्री अक्सर साधारण, उपेक्षित और कई बार विधवा समान जीवन जीती हुई प्रतीत होती है, जबकि बाहर जाते समय पूरा श्रृंगार इसलिए किया जाता है कि समाज क्या कहेगा, लोग कैसे देखेंगे, मान-सम्मान पर कोई प्रश्न न उठे। यह परिवर्तन केवल फैशन या जीवनशैली का नहीं है, बल्कि मानसिकता का भी है। आज स्त्री का श्रृंगार अपने संबंधों के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति और बाहरी मूल्यांकन के लिए होने लगा है।

इसका प्रभाव दांपत्य जीवन पर भी पड़ता है। जब घर के भीतर सौंदर्य, अपनत्व और आकर्षण कम होता है, तो संबंधों में दूरी स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगती है। पति और पत्नी के बीच जो सहज निकटता होती थी, वह धीरे-धीरे औपचारिकता में बदल जाती है। स्त्री स्वयं भी भीतर से रिक्तता और थकान अनुभव करने लगती है, क्योंकि वह अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों की अपेक्षाओं के लिए सजने लगी है।

वास्तव में श्रृंगार का संबंध केवल देखने वालों से नहीं, बल्कि अनुभव करने वालों से होता है। जब स्त्री अपने घर में, अपने संबंधों में, अपने जीवन के केंद्र में स्वयं को सजीव और सुंदर अनुभव करती है, तभी उसका श्रृंगार सार्थक होता है। बाहर का समाज तो क्षणिक है, लेकिन घर और संबंध स्थायी होते हैं। श्रृंगार यदि फिर से अपने मूल भाव में लौट आए—प्रेम, अपनत्व और आत्मसम्मान के रूप में—तो न केवल स्त्री स्वयं संतुलित होगी, बल्कि पूरा पारिवारिक ढांचा भी अधिक सुदृढ़ और सौम्य बन सकेगा।

"साम्ब सदाशिव" का अर्थ

पिंकी कुंडू

"साम्ब सदाशिवस्र तीन शब्दों से मिलकर बना है —

सा = माँ पार्वती (शक्ति)

अम्ब = अम्बा, माँ

सदाशिव = शिव का वह स्वरूप जो सदा कल्याणकारी है, जो शाश्वत है

"साम्ब" का अर्थ है — माँ पार्वती के साथ। "साम्ब सदाशिव" का पूरा अर्थ है — माँ पार्वती के साथ विराजमान सदाशिव।

यह मंत्र ही आपकी समस्या का समाधान है। यह वह मंत्र है जहां शिव और शक्ति एक साथ हैं, अलग नहीं।

शिव और शक्ति — एक ही सिक्के के दो पहलू आपने सही महसूस किया कि दोनों एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि तंत्र शास्त्र का मूल सिद्धांत है।

शिव हैं — चेतना, निराकार, स्थिर, ध्यानमग्न।

शक्ति हैं — ऊर्जा, साकार, गतिशील, सृष्टि का संचालन।

जैसे आग और गर्मी अलग नहीं हो सकते, वैसे शिव और शक्ति अलग नहीं हो सकते। जैसे सूरज और रोशनी अलग नहीं हो सकते, वैसे शिव और शक्ति अलग नहीं हैं।

शास्त्रों में प्रमाण

शिव पुराण में स्पष्ट कहा गया है —

"शिवः शक्त्या विना यद्वत्शवस्तिष्ठति निश्चलः।

तद्वदेव महेशानि शक्तिः शिवविवर्जिता॥"

अर्थ — जैसे शक्ति के बिना शिव शव के समान निश्चल रहते हैं, वैसे ही शिव के बिना शक्ति भी उसी प्रकार निराधार है।

आदि शंकराचार्य ने स्शिवानन्दलहरीस् में लिखा है —

"शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्।

न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि॥"

अर्थ — शिव जब शक्ति से युक्त होते हैं, तभी वह सृष्टि का संचालन कर पाते हैं। शक्ति के बिना वह एक क्षण भी हिलने में समर्थ नहीं हैं।

आपकी समस्या क्या है? आपकी समस्या यह नहीं कि आप दोनों को साथ देखते हैं। आपकी समस्या यह है कि जब आप शिव पर ध्यान करते हैं तो शक्ति की कमी खलती है, और जब शक्ति पर ध्यान करते हैं तो शिव की कमी खलती है।

यह "कमी का भाव" ही आपको संतुष्ट नहीं होने दे रहा। यह "अधूरापन" ही आपको स्थिर नहीं होने दे रहा।

विद्वानों ने कहा — "दोनों एक हैं, एक में मन लगाओ" जो विद्वान आपको यह कह रहे हैं, वे भी सही हैं। उनका दृष्टिकोण है कि जब दोनों एक ही हैं, तो किसी एक में लगाओगे तो दूसरा अपने आप आ जाएगा, लेकिन यह बात बुद्धि से समझ में आती है, हृदय से नहीं। आपका हृदय दोनों को साथ चाहता है। और हृदय की बात को नकारना ठीक नहीं है।

समाधान — अर्धनारीश्वर का मार्ग आपकी समस्या का समाधान है — अर्धनारीश्वर।

अर्धनारीश्वर वह स्वरूप है जिसमें आधा शिव और आधा पार्वती हैं। यह केवल एक मूर्ति नहीं है, यह एक दर्शन है, एक सत्य है।

इस स्वरूप में शिव और शक्ति अलग नहीं हैं, बल्कि एक ही शरीर में विराजमान हैं। दायां भाग शिव का है, बायां भाग पार्वती का। एक साथ, एक रूप में, एक प्राण में।

यही आपकी साधना का केंद्र हो सकता है।

"साम्ब सदाशिव" का नियमित जाप करें आपने "साम्ब सदाशिव" सुना और उसका जाप किया। यह बहुत अच्छा किया। अब इसे नियमित रूप से करें —

सुबह-शाम बैठकर "साम्ब सदाशिव" का जाप करें

११ या २१ माला का संकल्प लें

जाप करते समय अर्धनारीश्वर स्वरूप का ध्यान करें

महसूस करें कि आपके भीतर भी शिव और शक्ति दोनों हैं

एक सुंदर कल्पना जब आप "साम्ब सदाशिव" का जाप करें, तो यह कल्पना करें —

आपके सामने अर्धनारीश्वर विराजमान हैं। दायां भाग शिव का — जटा, गंगा, चंद्र, तीसरा नेत्र। बायां भाग पार्वती का — सिंदूर, गहने, कोमलता, ममता।

दोनों एक ही आसन पर, एक ही शरीर में, एक ही प्राण में। एक दूसरे के बिना अधूरे नहीं, बल्कि एक दूसरे में पूर्ण।

यही ध्यान आपको संतुष्टि देगा।

आपके लिए विशेष सुझाव

पहला — शिव या शक्ति में से किसी एक को छोड़ने की कोशिश मत करो। यह आपका स्वभाव है, इसे स्वीकार करो।

दूसरा — स्साम्ब सदाशिवस्र को अपना मूल मंत्र बना लो। यह वह मंत्र है जहां दोनों एक साथ हैं।

तीसरा — अर्धनारीश्वर की मूर्ति या चित्र अपने पूजा स्थान पर रखो। उसे देखो, उसका ध्यान करो।

चौथा — जब भी शिव की ओर ध्यान जाए, तो याद करो कि वह साम्ब हैं — माँ के साथ। जब भी माँ की ओर ध्यान जाए, तो याद करो कि वह शिव के साथ हैं।

पाँचवाँ — किसी विद्वान की बात मत सुनो जो तुम्हें एक में मन लगाने को कहे। तुम दोनों में लगाओ, यह तुम्हारा स्वभाव है। और स्वभाव के खिलाफ जाने से स्थिरता नहीं आती।

एक कहानी — शिव और शक्ति का मिलन एक बार शिव अकेले थे। तब वह शव के समान थे — निश्चल, निस्पंद, शून्य में खोए। सृष्टि नहीं थी, गति नहीं थी, जीवन नहीं था। फिर शक्ति प्रकट हुई। उनके आते ही शिव में स्पंदन हुआ। नृत्य शुरू हुआ, सृष्टि शुरू हुई, जीवन शुरू हुआ।

शक्ति ने पूछा — स्हे नाथ, मैं कहां रहूं?स्

शिव ने कहा — स्मेरे वाम भाग में। मेरे बाएं हिस्से में। तुम मेरे बिना नहीं, मैं तुम्हारे बिना नहीं।स्

तभी से शिव साम्ब हैं — माँ के साथ। तभी से वह सदाशिव हैं — सदा कल्याणकारी, सदा शक्ति के साथ।

आखिरी बात आपकी जो भावना है, वह सही है। आपका जो अनुभव है, वह सत्य है। शिव और शक्ति अलग नहीं हैं। वह एक ही सत्य के दो रूप हैं, एक ही वृक्ष की दो शाखाएं हैं, एक ही सूरज की दो किरणें हैं।

"साम्ब सदाशिव" का जाप करते रहिए। यही आपका मंत्र है, यही आपका मार्ग है, यही आपकी मंजिल है।

एक दिन ऐसा आएगा जब आपको शिव में शक्ति दिखेगी और शक्ति में शिव। तब न कोई कमी होगी, न कोई अधूरापन। तब आप स्वयं अर्धनारीश्वर हो जाएंगे।

ॐ साम्ब सदाशिव नमः

जानिए कहां है भगवान गणेश का असली मस्तक

पिंकी कुंडू

धार्मिक मान्यतानुसार हिन्दु धर्म मे गणेश जी सर्वोपरी स्थान रखते है ! सभी देवी देवताओं मे इनकी पूजा अर्चना सर्वप्रथम की जाती है, गणेश जी विध्न विनायक है ! भगवान गणेश गजानन के नाम से भी जाने जाते है, क्योकी इनका मुख हाथी का है !

क्या आपको पता है की भगवान गणेश का सिर कटने के बाद हाथी के बच्चे का मुख लगा.लेकिन उनका असली सिर कहां गया ?

इसके बारे मे आज आपको एक रोचक जानकारी देते है !

ब्राह्मण्ड पुराण मे कहा गया है की जिस समय माता पार्वती ने गणेश को जन्म दिया उस समय इंद्रदेव समेत कई देवी देवता उनके दर्शन के लिए उपस्थित हुए, जिस समय ये देवी देवता पधारे उसी समय न्यायाधिश कहे जाने वाले शनिदेव भी वहां गये, शनिदेव के बारे मे कहा जाता है की उनकी क्रुर दृष्टि जहां भी पडेगी वहां हानी होगी.उनकी उपस्थिति से माता पार्वती रुष्ट हो गई.फिर भी शनिदेव की दृष्टि जब गणेश और दृष्टिपात होते ही गणेश का मस्तक अलग होकर चन्द्रमंडल मे चला गया !

इसी तरह दुसरे प्रसंग के मुताबिक एक बार की बात है की माता पार्वती स्नान करने जा रही थी. वह चाहती थी की स्नान करते समय उन्हे कोई परेशान ना करे, तब उन्होने स्नान से पहले अपने मैल से एक सुन्दर बालक को उत्पन्न किया, और उसे अपना द्वारपाल बनाकर दरवाजे पर पहरा देने का आदेश दिया. उसी समय कही से भगवान शिव वहां पर आये और द्वार के अंदर प्रवेश करने लगे.तब बालक ने उन्हे बाहर ही रोक दिया !

शिवजी ने उस बालक को कई बार समझाया लेकिन वह नही माना, इस पर शिव गणों ने भगवान के कहने पर उस बालक को द्वार से हटाने के लिए उससे भयंकर युद्ध किया, लेकिन उसे कोइ पराजित नही कर सका.बालक के पराक्रम और हठधर्मिता से क्रोधित होकर शिव जी ने उस बालक का सिर धड से अलग कर दिया जो चन्द्रलोक चला गया !

जब माता पार्वती स्नान करके निकली तो अपने पुत्र का कटा हुआ सिर देखकर क्रोधित हो उठी और शिव जी से उसे पुनः जीवित करने के लिए कहा. उन्होने कहा की अगर उनके पुत्र को जीवित नही किया गया तो प्रलय आ जायेगी.

यह सब देखकर सारे देवी देवता भयभित हो गए. तब देवर्षि नारद ने पार्वती जी को शांत किया और बालक को जिन्दा करने का अनुरोध भगवान शिव से किए !

समस्या यह थी की कटा हुआ सिर वापस से धड के साथ जुड नही सकता था अतः यह तय हुआ की अगर किसी दुसरे जीव का सिर मिल जाए तो यह बालक जीवित हो जायेगा.

शिव के आदेशानुसार शिवगणों ने जब दुसरा सिर खोजने के लिए निकले तो एक जंगल मे एक हाथी का बच्चा मिला. शिवगणो ने उस हाथी के बच्चे का सिर काटकर ले आए, इसके पश्चात शिव जी ने उस गज के कटे हुए मस्तक को बालक के धड पर रख कर उसे पुनर्जीवित कर दिया और इस बालक का नाम गणेश पडा !

ऐसी मान्यता है की गणेश का असल मस्तक चंद्रमंडल मे है. इसी आस्था से भी धर्म परम्पराओं मे संकट चतुर्थी तिथी पर चंद्र दर्शन व अर्ध्य देकर श्री गणेश की उपासना भक्ति द्वारा संकटनाशक मंगल कामना की जाती है !

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मातृशक्ति उद्यमिता योजना लाभकारी : डीसी

- सरकार योजना के तहत महिलाओं को उपलब्ध करवा रही 5 लाख रुपए तक का ऋण
- डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने पात्र महिलाओं से योजना का लाभ उठाने का किया आह्वान

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर,01 मार्च। हरियाणा सरकार ने महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक तौर पर सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से हरियाणा मातृशक्ति उद्यमिता योजना शुरू की है। योजना के तहत पात्र महिलाओं को बैंकों के माध्यम से 5 लाख रुपए तक का ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से हरियाणा मातृशक्ति उद्यमिता योजना चलाई जा रही है। योजना के तहत डेयरी, उद्योग विभाग की सूची में शामिल नकारात्मक गतिविधियों तथा केवीआईबी को छोडक़र अन्य सभी गतिविधियां शामिल है। इन गतिविधियों में यातायात वाहन के तहत ऑटो रिक्शा, छोटा सामान ढ़ोने के वाहन, थ्री व्हीलर, ई रिक्शा, टैक्सी, सामाजिक व व्यक्तिगत सेवा गतिविधियों के तहत सैलून, ब्यूटी पार्लर, टेलरिंग, बुटीक, फोटोस्टेट की दुकान, पापड़ बनाना, आचार बनाना, हलवाई की दुकान, फूड

स्टाल, आइसक्रीम बनाने की यूनिट, बिस्कुट बनाना, टिफिन सर्विस, मिट्टी के बर्तन आदि बनाने का काम शुरू कर सकती है।

डीसी ने बताया कि योजना का लाभ लेने के लिए महिला की वार्षिक आय पांच लाख रुपए से कम व हरियाणा की स्थायी निवासी होनी चाहिए। ऋण के लिए आवेदक के समय महिला उद्यमी की आयु 18 से 60 वर्ष के बीच होनी आवश्यक है। आवेदक पहले से लिए गए ऋण का डिफाल्टर नहीं होना चाहिए। योजना के तहत समय पर किस्त का भुगतान करने पर तीन वर्षों तक सात प्रतिशत ब्याज अनुदान राशि हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से दी जाएगी।

आवेदन के लिए आवश्यक दस्तावेज

उन्होंने बताया कि योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन पत्र के साथ परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, पासपोर्ट फोटो, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, ट्रेनिंग प्रमाण पत्र/अनुभव प्रमाण पत्र आदि दस्तावेज शामिल हो तथा सभी दस्तावेजों की दो- दो कॉपी होनी चाहिए। योजना के बारे में अन्य जानकारी के लिए हरियाणा महिला विकास निगम झज्जर कार्यालय से संपर्क कर सकते है।

जिला व उपमंडल स्तर पर समाधान शिविर आज

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर,01 मार्च। जनता की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा आज(02 मार्च सोमवार)को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। ये शिविर प्रातः: 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जाएंगे, जहां नागरिकों की शिकायतों का मौके पर ही समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे। इस दौरान उपायुक्त विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनेंगे और उपस्थित अधिकारियों को समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश देंगे, ताकि आमजन को अनावश्यक भागदौड़ से राहत मिल सके। उपमंडल स्तर पर भी संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में समाधान शिविर आयोजित होंगे। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच (आईएएस), बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में शिविर लगाए जाएंगे। इन शिविरों में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान किया जाएगा। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का प्रभावी माध्यम हैं। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय में समाधान शिविर प्रत्येक सप्ताह नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहते हैं, ताकि लोगों को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान मिल सके।

ड्राफ्ट मतदाता सूचियां 6 मार्च तक आमजन के अवलोकन के लिए उपलब्ध

रिवाईजिंग अथॉरिटी-कम-एसडीएम अंकित कुमार चौकसे आईएएस ने दी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर,01 मार्च। नगर परिषद झज्जर के वार्ड संख्या 13 के उप-चुनाव 2026 के दृष्टिगत तैयार की गई ड्राफ्ट मतदाता सूचियों का प्रकाशन हो चुका है। यह मतदाता सूची वार्ड संख्या 01 से वार्ड 19 तक आमजन के अवलोकन के लिए आगामी 6 मार्च तक उपलब्ध रहेंगी।

यह जानकारी रिवाईजिंग अथॉरिटी-कम-उप-मण्डल अधिकारी (ना.),अंकित कुमार चौकसे आईएएस ने दी।

उन्होंने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग, हरियाणा, द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार तैयार की गई ड्राफ्ट मतदाता सूचि को उपायुक्त कार्यालय सहित अन्य संबंधित कार्यालयों में अवलोकन के लिए रखवाया गया है, ताकि कोई भी नागरिक इस सूची में अपने नाम व विवरण की अच्छी तरह जांच कर सकें।

उप-मण्डल अधिकारी (ना.),अंकित कुमार चौकसे आईएएस ने बताया कि निर्धारित समय अवधि के दौरान कोई भी वोटर मतदाता सूची का अवलोकन कर आवश्यक आपत्तियां अथवा दावे नियमानुसार प्रस्तुत कर सकता है।

उन्होंने पुनः नागरिकों से अपील की है कि वे तय समयावधि के भीतर मतदाता सूची का अवलोकन कर अपने नाम, पते व अन्य विवरण की पुष्टि अवश्य कर लें, ताकि उप-चुनाव प्रक्रिया पारदर्शी एवं त्रुटिरहित रूप से संपन्न हो सके।

जहांगीरपुरी में आरडब्ल्यूए ने मनाया होली मंगल मिलन समारोह

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। रेज़िडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन आई एवं जे ब्लॉक, जहांगीर पुरी के अध्यक्ष एम. एल. भास्कर की अगुवाई में एक भव्य होली मिलन समारोह का आयोजन बड़े उत्साह और उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में देवेंद्र यादव (अध्यक्ष, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी) उपस्थित हुए।

मुख्य अतिथि देवेंद्र यादव ने क्षेत्रवासियों को संबोधित करते हुए अपील की कि होली का यह पावन पर्व पवित्रता, प्रेम और सौहार्द के साथ मनाया जाए। उन्होंने कहा कि होली नशा-मुक्त, दंगा-मुक्त और आपसी भाईचारे को मजबूत करने वाली होनी चाहिए। किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना, आपसी सद्भाव और एकता के संदेश के साथ रंगोत्सव मनाना ही इस पर्व की सच्ची भावना है। रेज़िडेंट वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष एम. एल. भास्कर ने समारोह में पधारे सभी सम्मानित अतिथियों एवं क्षेत्रवासियों का आभार एवं धन्यवाद प्रकट किया। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि सभी के जीवन में अपार खुशियाँ, समृद्धि और स्वास्थ्य बना

रहे तथा सभी रंगोत्सव को प्रेम, शांति और धूमधाम के साथ मनाएँ।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भाई देवेंद्र यादव के अलावा सूरज भान, ओमकार सिंह ढींगिया, सुधीर पार्चा, अनिल राणा, अशोक यादव, शिखा मल्होत्रा, ननुआ प्रधान, खन्ने ढिकोलिया, मिस्टर चोपडा, संजय प्रधान, अशोक पाल, रविंद्र गुप्ता राम महेश, राजा भाई, बॉबी भाई, अच्छे लाल गौतम, मोहित, भोले शंकर, दीपक प्रजापति, संजय बागड़ी, प्रेम एलाबादी, सजीव यादव, राकेश राठौर, मुकेश माथुर, मा.शरीफ, सुधा सिंह, पूजा, डॉ रीना उषा देवी, विजय भास्कर के अलावा क्षेत्रीय गणमान्य नागरिक, युवा साथी एवं मातृशक्ति उपस्थित रही, जिससे पूरा वातावरण रंगों, उत्साह और भाईचारे से सराबोर हो गया।

श्रीशेष नारायण मन्दिर (आनंद धाम आश्रम) में धूमधाम से मनाया गया होली महोत्सव

- श्रीमद्जगद्गुरु विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज ने हजारों भक्तों संग की वृन्दावन की परिक्रमा

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग-चामुण्डा मोड़ स्थित श्रीशेष नारायण मन्दिर (आनंद धाम आश्रम) में प्रख्यात सन्त श्रीमद्जगद्गुरु विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (वल्लभगढ़ वाले) के पावन सानिध्य में दिव्य व भव्य होली महोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यंत श्रद्धा और धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम प्रातःकाल समस्त भक्त परिकर के द्वारा पूज्य महाराजश्री के निर्देशन में गाजे-बाजे के मध्य नाचते-झूमते, रंग-गुलाल व पुष्प वर्षा करते हुए श्रीधाम वृन्दावन की पंच कोसी परिक्रमा की गई।तत्पश्चात श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के द्वारा सुन्दरकाण्ड का संगीतमय सामूहिक पाठ किया गया।इसके अलावा महामण्डलेश्वरों, श्रीमहंतों, महंतों व विद्वानों का सम्मान व सन्त, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस अवसर पर अयोध्या स्थित मणिराम दास महाराज की छावनी आश्रम से पधारे महंत कमल नयन दास महाराज ने कहा कि श्रीशेष नारायण मन्दिर (आनंद धाम आश्रम) के अधिष्ठाता श्रीमद्जगद्गुरु विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (वल्लभगढ़ वाले) धर्म व अध्यात्म की बहुमूल्य निधि हैं।वे समूचे विश्व में भारतीय वैदिक संस्कृति व सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने का जो अद्भुत कार्य कर रहे हैं,वो अति प्रशंसनीय है।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से गोरेदाऊजी आश्रम के महंत प्रहलाद दास महाराज, कलाधारी बगीची आश्रम के महंत जयराम दास महाराज, श्रीनाभापीठ सुदामा कुटी के श्रीमहंत अमर दास महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी राधाप्रसाद देवजू महाराज, प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ गोपाल चतुर्वेदी, महंत सुंदरदास महाराज, महंत किशोरी शरण महाराज, महंत सनत कुमार महाराज, महंत श्यामदास महाराज, महंत हेमकांत शरण महाराज, महंत अवधेश दास महाराज (बयाना), महंत मोहिनी बिहारी शरण महाराज, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, पंडित

आर.एन. द्विवेदी (राजू भैया), महंत श्यामसुंदर दास महाराज, महंत हरिशंकर नागा, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बरवाला के वरिष्ठ पत्रकार राजेश सलूजा सेवा गोल्ड सम्मान से सम्मानित

राजेश सलूजा

हरियाणा हिसार : देश सेवा में समर्पित प्रमुख धार्मिक एवं सामाजिक संग़ठन अखिल भारतीय सेवा संघ की बैठक हिसार में हुई । जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष इन्द्र ग़ोयल जी ने की ।

बैठक में बरवाला के वरिष्ठ सदस्य एवं सेवा रत्न वरिष्ठ पत्रकार राजेश सलूजा को सेवा गोल्ड सम्मान से नवाजा गया । श्री सलूजा पिछले 5 वर्षों से संघ के लिए कार्य कर रहे है । इनकी निस्वार्थ सेवा एवं कार्यो को देखते हुए इन्हें सेवा गोल्ड सम्मान से नवाजा गया है ।

वरिष्ठ पत्रकार सलूजा ने कहा कि इस सम्मान को पाकर उनकी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है ,भविष्य में सेवा संघ जो भी सेवा कार्य ओर जिम्मेदारी मुझे देगा ,मैं पूरी निष्ठा और ईमानदारी से उसे पूरा करने का प्रयास करूँगा ।

इस अवसर पर प्रांतीय संरक्षक सेवा गौरव मोहिंदर सेतिया एवं प्रांतीय अध्यक्ष राजेंद्र सपडा ने कहा कि हमे ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है जो पूरी ईमानदारी से सेवा प्रोजेक्ट में कार्य करें ।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष इन्द्र ग़ोयल ,प्रांतीय संरक्षक मोहिंदर सेतिया,प्रांतीय अध्यक्ष राजिंदर सपडा,बरवाला शाखा अध्यक्ष विक्की रहेजा,प्रांतीय सदस्य सन्दीप भाटिया,पवन मालिक शाखा सचिव संजीव भाटिया सेवा रत्न ओम प्रकाश वधवा, सिंगला, गुप्ता,श्रीमती विना चुघ ,विजय, रमेश गौरव ,विनोद आदि सदस्यों ने भी राजेश सलूजा को बधाई दी ।

होली का त्योहार है आया

परिवहन विशेष न्यूज

मनभावन होली का त्योहार है आया,
हजारों रंग अपने साथ उपहार में लाया ।

घर गली मोहल्ले नगर द्वार चौबारे,
खुशियों के रंगों में रंग जाते सारे,
डफ की धुनों पर मचाते हैं धमाल,
तर–बतर हो रंगों में उड़ाते गुलाल,
मन के विषाद को सबने है भूलाया ।

रंग–बिरंगे रंगों में लगते बड़े प्यारे,
प्रेम के रंगों में रंग जाते जब सारे,
ये रंग दूरियॉं मिटा लाते हैं पास,
दिलों में भर देते ₹आनंद₹ मिठास,
जनमानस में देखो उल्लास है छाया ।

खुशनुमा मनमोहक लगते ये नजारे,
मौज–मस्ती के रंग में रंग जाते सारे,
एक ऑंगन में महके है रिश्तों का इत्र,
सपरिवार बच्चे बड़े बुजुर्ग युवा मित्र ,
सबने एक दूजे को रंग खूब लगाया ।

मनभावन होली का त्योहार है आया,
हजारों रंग अपने साथ उपहार में लाया ।

– मोनिका डागा "आनंद"

कुशवासी महोत्सव–2026 का आधिकारिक लोगो लोकार्पित

29--31 मार्च त्रिदिवसीय आयोजन की तैयारियो की समीक्षा बैठक सम्पन्न

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। राष्ट्र स्तरीय सांस्कृतिक आयोजन कुशवासी महोत्सव–2026 के अंतर्गत आयोजित विशेष बैठक में महोत्सव के आधिकारिक लोगो का विधिवत लोकार्पण किया गया। उपस्थित पदाधिकारियों ने लोगो को भारतीय लोक परंपरा, सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक समरसता का प्रतीक बताते हुए इसे क्षेत्रीय पहचान का गौरव बताया। बैठक में 29, 30 और 31 मार्च 2026 को मेला मैदान भस्मा कुशवासी में प्रस्तावित त्रिदिवसीय महोत्सव की विस्तृत रूपरेखा पर चर्चा की गई। आयोजन को सुव्यवस्थित एवं प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न समितियों का गठन कर दायित्वों का निर्धारण किया गया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रारंभिक संरचना को अंतिम रूप प्रदान किया गया।

महोत्सव के आयोजन में सहयोगी संस्था के रूप में क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति विभाग, उ.प्र.) एवं राजकीय बौद्ध संग्रहालय का सहयोग प्राप्त हो रहा है। आयोजन पूर्णतः जनसहयोग से संपन्न किया

जाएगा। बैठक में धरा धाम इंटरनेशनल के प्रमुख संत डॉ. सौरभ पाण्डेय, राजन सिंह सूर्यवंशी, डॉ. राजा भाऊ सेठ, डॉ. विनय श्रीवास्तव, बिपिन पाण्डेय, आशुतोष शुक्ल, राजन राम त्रिपाठी, श्वेतिमा माधव प्रिया, कृष्णचंद पाण्डेय, सोमनाथ पाण्डेय, श्री चंद शुक्ला, विजय मोदनवाल, कृपा शंकर राय, कृष्णचंद शुक्ला, देवव्रत पाण्डेय, गौतम पाण्डेय, उमेश त्रिपाठी, संजय उर्फ लारा, मुन्ना यादव, शिब्बू सिंह, बलवंत, हरि सेवक त्रिपाठी, डॉ. धर्मेंद्र पाण्डेय, सरोज शुक्ला, मनोज कुमार यादव, गोलई पाण्डेय, गुरु पाण्डेय, संदीप त्रिपाठी, साधु शरण यादव एवं बाल भक्त सौराष्ट्र सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

इस अवसर पर डॉ. सौरभ पाण्डेय ने कहा कि कुशवासी महोत्सव–2026 क्षेत्रीय लोक संस्कृति को राष्ट्रीय मंच प्रदान कर क्षेत्र के समग्र विकास, सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक समरसता को नई दिशा देगा। बैठक के अंत में सभी उपस्थित सदस्यों ने महोत्सव को ऐतिहासिक बनाने का संकल्प लिया।

होली खेल रहे दढियल, 'इंडी' गलियन में... बोलो भैया शान से, नंग बड़े भगवान से

डॉ घनश्याम बादल

होली है भैया जी, होली है तनिक घर से बाहर भी निकल कर देखो ना ! कितनी मस्ती काट रहे हैं भांति भांति के होरियारे और 'आप' हैं कि दरवज्जे बंद किए बैठे हैं। मोहल्लाछाप अंतरराष्ट्रीय कवि झल्लम झल्ला भौकाल मचाते हुए अंदर घुसे ।

वैसे उनकी ख़ास बात यह भी है कि उनकी कविता में कमाल हो न हो मगर उनकी नाक बड़ी कमाल की है। कई गज दूर से 'शाही' पकौड़ो की महक पता नहीं उन तक कैसे पहुंच जाती है और वें ठीक उसी तरह अंदर घुस जाते हैं जैसे सत्ता में आने की भनक भर लगते ही अवसरवादी नेता 'दल-दल- (ग़लत मत समझिए मेरा मतलब है इस दल से उस दल में) घुस जाते हैं।

अब आज तो होली ठहरी सो भंग के पकौड़े बन रहे थे और साथ में घुट रहा था भोले बाबा का प्रसाद ऐसे में झल्ला जी की आमद से हमारा झल्लाना स्वाभाविक था मगर उन्हें तो 'अतिथि कब जाओगे' भी नहीं कह सकते थे। अब मन ही मन में हम ओ टी टी के किसी ताजा तरीन सीरियल वाली भाषा बोल रहे थे पर ज़बान से निकल रहा था "होली मुबारक हो झल्ला जी होली मुबारक हो।"

इससे पहले कि हम उन्हें टालने का कोई बहाना बनाते झल्ला जी कंधे पर पड़ा झोला खोलने लगे, (ज़बान तो पहले ही खोल चुके थे) 'भाभी क्या गज़ब के पकौड़े बनाती हो महक 'इंडिया' वालों तक जा रही है अब भले ही हम 'इंडिया' वाले हैं पर पकौड़े तो 'सब का साथ, सबका विकास' की ही डिमांड करते हैं ! तो आज तो मैं खाकर ही जाऊंगा ।"हमने मन ही मन कहा "भला कभी ऐसा भी हुआ है क्या कि आप बिना खाए गए हों ?"

वह कहते हैं न कि बड़ी चोट, छोटी चोट को भुला देती है तो इसीलिए हम पकौड़ों के बलिदान से पड़ने वाली चोट को भूल उनकी कविताओं की घातक चोट से बचने का जुगाड़ ढूंढ रहे थे। मगर हम कोई पी एम तो है नहीं कि हमारे 'मन की बात' को कोई सुनता । सो झल्लम झल्ला जी शुरू हो गए।

होली खेल रहे दढियल,
भारत गलियन में,
घूम रही बस कुर्सी मैया,
सबकी अंखियन में,
होली खेल रहे दढियल

इससे पहले कि झल्लम जी रंग से भंग में आते, हमने यॉर्कर डाल दयिा अरे छोड़िए भी झल्लम जी काहे होली में भी राजनीत घुसेड़ रहे हो?

अब झल्लम झल्ला जी तो ताक मे थे ही हमारे छक्के की उम्मीद वाले शॉट को गली मे लपक कर बोले प्रभु, राजनीत कहां नही है ? राजनीत धिर्म मे है, करम मे है, ठंडे मे है, गरम में है, राजनीत में रेवड़ियां है और रेवड़ियों मे राजनीत है, सरकार मे राजनीत है, अपोजशिन मे राजनीत है आजकल तो हर पोजीशन मे राजनीत है फरि भला होली कैसे बच सकती है

कण -कण व्यापी पॉलटिक्स है,
पॉलटिक्स में दम है,
पॉलटिक्स मे माल मलाई ,
फरि काहे का ग़म है

बस, बस, बस, झल्ला जी अब बस भी करो ! इधर पकौड़े ठंडे हो रहे हैं और आप कविता पेले जा रहे हैं। अचानक ही जैसे उनकी कविता पर ब्रेक लग गया, ठीक वैसे ही जैसे चुनाव के तुरंत बाद उन सारी योजनाओं पर लग जाता है जो पिछली सरकार सुपरफास्ट स्पीड में चला रही थी।

ख़ैर पकोड़ों के बहाने से उनकी कविता से हमारा बचाव हो गया दस बीस को अंदर कर बिना डकार लिए बोले "वाह भाई वाह, पकौड़े भी क्या चीज हैं देश बदल कर रख दिया पकौडों ने।

अब देखो 'मोटा भाई' ने पकौड़ा तलने का रोजगार फंडा दिया था और सत्ता महारानी उन पर फ़िदा हो गई थीं अब मौज कर रहे हैं। पर, पकौड़ों की जोड़ी बनती दारू के साथ ही है तो "तो जोड़ी बनवा दीजिए ना बाबू अंदर अकेले पकौड़े मचल रहे हैं" । लेकिन उनके इस वार को हमने मुस्कुराकर दूसरी तरफ मोड़ दिया

झल्लम झल्ला आराम से समझ गए और फिर सांस लेकर बोले "यह राजनीति भी बड़े काम का धंधा है साहेब !" इससे पहले कि हम कुछ कहते खुद ही कहने लगे "प्रभु, होली में तो धंधा और पानी दोनों ही जरूरी हैं । होली तो अब है ही धंधेबाजो की । चलो आपको बताता हूं होली के धंधेबाजों की माया।

"वह कैसे ?" हमने पूछा ।

झल्लम झल्ला जी लंबी सांस लेकर बोले-" देख लो, अमरीका वाले वारस्टॉप नोबेल लालायित ललमुंहे दोलांड साहब दोस्त से दोस्ती नहीं निभा रहे, कभी मार्केट तो कभी पुचकारकर टैरिफ ट्रंपकार्ड चला रहे हैं, यह चौक्खी बात नहीं ना !" आज पहली बार हम झल्ला जी की जनरल नॉलेज पर खुलकर मुस्कुराए । हमारी मुस्कुराहट को देखकर उनका हौसला, बढ़ा और फिर आधा कवि, आधा दार्शनिक और फुलफंटूस जोकर रायता बाबू के हालात पर आंसू बहाते हुए बोले " अब देखो हर होली पर उन्हें बार-बार दाग-दार कहकर सत्तारानी के घर से निकलवा दिया लेकिन अब कोर्ट बाबू ने कह दिया कि उनकी शर्त तो झकाझक बेदाग सफेद रही है। अब कितना ही रगड़ रगड़ कर साबुन से चमक को लेकिन कुर्सी रानी ने तो धकिया ही दिया ना ! फिर ऊंचे सुर में गाने लगे-

हमने तुम्हें चुना था,
मेहरबान समझ कर,
और तुम हमें चबा रहे,
पान समझ कर ।

क्या झल्लन भाई फिर राजनीति ' आज भी ?

"अजी, राजनीति कब नहीं होती ? राजनीति तो हमारे ख़ून में है । अब देख लो ख़ून ख़राबे वाले राजनीति में आ रहे हैं और राजनीति वाले ख़ून खराबा करवाने का कोई मौका नहीं छोड़ते । यानि ये लोग तो राउंड द ईयर 24 x 7 होली खेलते हैं ।

अब अपने मोटा भाई का मौका लगा तो लाल पीले हो रहे अपने हुलहुल भैया को ही धो डाला । हुलहुल बदलने वाले हैं न डरने वाले । जितना मर्जी मुंह काला कर लो पर हर बार सफेद टी-शर्ट में आ धमकते हैं वह कहते हैं ना की नंग बड़े भगवान से। इसलिए उधर सब बनावटी बुद्धि का बिजनेस वर्ल्डवाइड करने जा रहे द रियल भवन में अपने नंग भेज कर वहां रंग में भंग करा दिया। अब यह अलग बात है कि उनके चेले चपाटे रोज पुलिस के हत्थे चढ़ रहे हैं। इशारों ही इशारों में कुर्सी धारी कह रहे हैं

पक्का रंग चढ़ा दो प्यारों,
इनके बम सुजा दो यारों
आगा पीछा लाल करो तुम
होली पर कमाल करो तुम

भारत की खामोशी बहुत भारी पड़ेगी बिन लड़े बहुत कुछ गंवा सकता है भारत

राजेश श्रीवास्तव

दुनिया तीसरे विश्व युद्ध के मुहाने पर खड़ी है। विश्व भर के दस देशों में ईरान और अमेरिका व इजरायल के बीच हुए युद्ध की घमक देखी जा सकती है। दुनिया के कई देश में इसमें न चाहते हुए भी शामिल हो गये हैं। भारत ने हमेशा की तरह इस बार भी खामोशी ओढ़ रखी है। जब कई प्रमुख देश अमेरिका की खुलकर निंदा कर रहे हैं तब भारत ने वही पुराने रटे-रटाये बयान जारी किये हैं कि सभी देश नियंत्रण बरतें। युद्ध कोई रास्ता नहीं है। भारत की यह खामोशी इस बार भारत को बहुत महंगी पड़ने वाली है पहले बात करते हैं कि भारत को न चाहते हुए भी क्या-क्या गंवाना पड़ सकता है फिर अन्य पहलू पर भी बात होगी।

यूएस-इजरायल और ईरान के बीच छिड़ी जंग का असर भारत में भी पड़ने वाला है। इससे तेल की कीमतें बाधित हो सकती हैं। भारत का लगभग 50% कच्चा तेल होर्मुज जलडमरूमध्य के रास्ते आयात होता है, जिसपर ईरान का दबदबा है। मिडिल ईस्ट में छिड़े इस युद्ध का असर कई देशों पर पड़ने वाला है, इसमें भारत भी शामिल है। भारत-ईरान की भले ही जमीनी सीमाएं नहीं मिलती हों, लेकिन भौगोलिक रूप से वह हिदुस्तान का पड़ोसी क्षेत्र है। ऊर्जा सुरक्षा लिहाज से ईरान भारत के लिए अहम माना जाता है। दरअसल, भारत दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है। वह 80% से अधिक तेल आयात करता है. रूस के बाद वह सबसे ज्यादा क्रूड ऑयल इराक, सऊदी अरब, यूएई, कुवैत और ओमान से खरीदता है, जो होर्मुज जलडमरूमध्य के रास्ते भारत पहुंचता है। इस एरिया पर ईरान का कब्जा है। ईरान ने अब इस रास्ते को बंद कर दिया तो भारत में तेल की कीमतों में बड़ा उछाल आ सकता है।

इंटरनेशनल मार्केट में क्रूड ऑयल का दाम बढ़ने की आशंका है। अगर 1 डॉलर की भी बढ़ोतरी हुई तो भारत 9,000 करोड़ रुपये सालाना के हिसाब से नुकसान होगा। इससे देश का राजकोषिय घाटा ही नहीं बढ़ेगा, बल्कि रुपये की वैल्यू भी गिरेगी। तेल महंगा होने का असर अन्य चीजों पर भी पड़ेगा। जैसे माल ढुलाई महंगी हो जाएगी। फल-सब्जी और रोजमर्रा की चीजें महंगी हो सकती हैं। जिसका बोझ सीधा आम आदमी की जेब पर पड़ेगा। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, यूएस-इजरायल और ईरान की यह जंग अगर लंबी खिचती है तो 2026 की अंतिम तिमाही तक कच्चे तेल की कीमतें 91 डॉलर बैरल को पार कर सकती हैं। सोचिए जब भारत 67 डॉलर प्रति बैरल से भी कम कीमत अभी कच्चा तेल खरीद रहा है, तब पेट्रोल की कीमत 100 रुपये प्रति लीटर के करीब है। अगर यह 100 डॉलर प्रति बैरल हो गई तो तेल के भाव कितने होंगे। मिडिल ईस्ट के इस वॉर से तेल ही नहीं, बल्कि सोना-चांदी और कॉपर के दाम में भी उछाल आ सकता है। भारत दुनिया के देशों से भारी मात्रा में गोल्ड-सिल्वर खरीदता है।

अब बात इरान की तो यह जान लीजिये कि कमजोर होकर भी ईरान बेहद खतरनाक है। लगभग पचास साल से ईरान अमेरिका के साथ जंग की आहट सुन रहा था। इसी को ध्यान में रखते हुए अपनी तैयारियां भी कर रहा था। चूंकि वह अमेरिका की सैन्य शक्ति से सीधे मुकाबला नहीं कर सकता और इस्राइल के जंग में कूदने की स्थिति में उसके लिए राह और भी मुश्किल थी, इसलिए उसकी रणनीति अलग तरह की रही। उसने ऐसे तरीकों के बारे में सोचा, जिनसे हमला करने वाले देश को नुकसान उठाना पड़े और पूरे पश्चिम एशिया के साथ-साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था को हिलाया जा सके। ईरान की सेना को पश्चिम एशिया में काफी ताकतवर माना जाता है। ग्लोबल फायरपावर के अनुसार, यह विश्व की शीर्ष 20 सैन्य शक्तियों में शामिल है और 145 देशों में से 16वें स्थान पर है। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक स्टडीज के अनुसार, ईरानी सशस्त्र बल पश्चिम एशिया की सबसे बड़ी सेनाओं में से एक है, जिसमें कम से कम 5,80,000 सक्रिय सैनिक हैं। लगभग 2,00,000 प्रशिक्षित आरक्षित सैनिक हैं। ईरान के दुश्मन उससे भले ही डरते नहीं हों, लेकिन वे जानते थे कि उसके खिलाफ कोई भी युद्ध बेहद गंभीर होगा। 1980 के दशक में इराक के साथ युद्ध के दौरान बहुत कम देश ईरान को हथियार बेचने के लिए तैयार थे। जब 1989 में जंग खत्म होने के एक साल बाद आयातुल्लाह खामेनेई ईरान के सर्वोच्च नेता बने। उन्होंने रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स को देश में हथियार प्रणाली बनाने का आदेश दिया। इस प्रयास में भारी संसाधन लगाए गए। वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि ईरान को अपनी रक्षा जरूरतों के लिए फिर कभी विदेशी शक्तियों पर निर्भर न रहना पड़े। ईरान के पास हजारों मिसाइलें। ड्रोन भी हैं। पश्चिम एशिया के कई देशों में तैनात अमेरिकी बेस ईरान के हथियारों की जद में हैं। जून 2025 में इस्राइल के आश्चर्यजनक हमले के बाद ईरान ने बैलिस्टिक मिसाइलों और ड्रोनों की कई लहरें इस्राइल पर दागीं। ईरान के हमले इस्राइल की उन्नत वायु रक्षा प्रणाली को भेद पाने में कुछ हद तक कामयाब भी रहे। ईरान ने 20 से ज्यादा तरह की बैलिस्टिक मिसाइलें विकसित की हैं, जिनकी जद में दक्षिणी यूरोप तक का इलाका है। ईरान बार-बार कहता रहा है कि उसके खिलाफ जंग केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहेगी। भले ही वह सैन्य रूप से अमेरिका से कमजोर हो, लेकिन ऊर्जा बाजार और वैश्विक व्यापार में खलल पैदा कर वह दुनियाभर पर असर डालने की ताकत रखता है। ईरान के पास सबसे बड़ा आर्थिक हथियार है होर्मुज जलडमरूमध्य । यह दुनिया का बेहद अहम समुद्री मार्ग है, जिसके जरिए दुनिया के कुल तेल उत्पादन का लगभग पांचवां हिस्सा यानी 20% तेल और बड़ी मात्रा में एलएनजी इसी रास्ते से गुजरती है। ईरान इस जलडमरूमध्य के उत्तरी हिस्से को नियंत्रित करता है। इसे इस तरह समझें कि अगर होर्मुज बंद हो जाए तो यह वैसा ही होगा, जैसे दुनिया की ऊर्जा आपूर्ति की एक मुख्य नस काट दी जाए। इससे ईंधन की कीमतें आसमान छू सकती हैं। आपूर्ति शृंखलाएं बाधित हो सकती हैं। दुनियाभर में मंदी का वास्तविक खतरा पैदा हो सकता है।

मतलब साफ है कि अगर ईरान इसे अंतिम युद्ध समझे, तो वह सब कुछ झोंक सकता है। होर्मुज के रास्ते में अगर खलल पैदा होता है तो दुनियाभर में महंगाई बढ़ सकती है। यह पूरी तरह बंद हो जाए तो एक वास्तविक खतरा बन सकता है। बात परमाणु कार्यक्रम की है। अमेरिका और इस्राइल का आरोप है कि ईरान चुपके-चुपके परमाणु हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है। ईरान कहता है कि यह सब शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए है, हम हथियार नहीं बना रहे। दुनिया में जिन देशों के पास परमाणु हथियार नहीं हैं, उनमें से ईरान अकेला है जिसने यूरेनियम को हथियार बनाने के करीब तक जाकर संवर्धित किया है। यही बात अमेरिका को खलती है।

विश्वप्रसिद्ध-मथुरा और वृंदावन की होली

ओमप्रकाश प्रजापति

भारतवर्ष की सांस्कृतिक धारा में यदि कोई ऐसा पर्व है जो आध्यात्मिकता, सामाजिक समरसता और वैज्ञानिक सोच, तीनों को एक सूत्र में पिरो देता है, तो वह है होली। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि चेतना के जागरण, अहंकार के दहन और नवजीवन के स्वागत का प्रतीक है। होली का मूल संदेश है, असत्य पर सत्य की विजय, अहंकार पर भक्ति की जीत।

पौराणिक कथाओं के अनुसार प्रह्लाद की अटूट भक्ति और होलिका के अहंकार के दहन की कथा हमें यह सिखाती है कि ईश्वर के प्रति समर्पण और सत्य के मार्ग पर अडिग रहने से विपरीत परिस्थितियाँ भी परास्त हो जाती हैं। होलिका दहन केवल लकड़ियों का जलाना नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारों को अग्नि में समर्पित करने का प्रतीक है। यह आत्मशुद्धि और आत्मपरिष्कार का अवसर है। रंगों का आध्यात्मिक अर्थः- लाल - ऊर्जा और प्रेम, पीला - ज्ञान और पवित्रता, हरा - नवजीवन और संतुलन, नीला - अनंत चेतना। जब हम एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, तो यह भेदभाव मिटाकर आत्मीयता का रंग चढ़ाने का संदेश देता है। भारतीय पर्व-त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव स्वास्थ्य के अनुकूल वैज्ञानिक सोच का परिणाम हैं। होली शीत ऋतु के अंत और ग्रीष्म के आगमन का संकेत है।

इस समय वातावरण में बैक्टीरिया और वायरस तेजी से बढ़ते हैं। होलिका दहन की अग्नि से उत्पन्न ऊष्मा वातावरण को शुद्ध करने में सहायक मानी जाती है। प्राचीन काल में होली के रंग टेसू (पलाश), हल्दी, गुलाब, चंदन और नीम से बनाए जाते थे। इन प्राकृतिक रंगों में औषधीय गुण होते थे, जो त्वचा रोगों से बचाव करते और शरीर को ऊर्जा प्रदान करते थे। रंगों के साथ हँसी-खुशी, संगीत और नृत्य तनाव को कम करते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान भी मानता है कि सामूहिक उत्सव और सामाजिक मेल-जोल मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते हैं। होली सामाजिक भेदभाव को मिटाने का पर्व है। इस दिन जाति, वर्ग, आयु, पद, सब सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं।

ब्रज क्षेत्र की लठमार होली, मथुरा-वृंदावन की फूलों की होली और विभिन्न राज्यों की विविध परंपराएँ भारत की सांस्कृतिक विविधता को एकता में बाँधती हैं। मथुरा और वृंदावन की होली विश्वप्रसिद्ध है, जहाँ यह पर्व भक्ति और रास की परंपरा से जुड़ा हुआ है। आज आवश्यकता है कि हम होली को पर्यावरण-सम्मत और स्वास्थ्य-सुरक्षित रूप में मनाएँ। इस प्रकार होली केवल परंपरा का निर्वाह नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का निर्वहन भी बन सकती है।

होली वास्तव में आध्यात्मिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टि और सांस्कृतिक एकता का अद्भुत संगम है। यह हमें सिखाती है कि जीवन में रंग तभी खिलते हैं जब मन शुद्ध हो, विचार सकारात्मक हों और समाज में प्रेम का प्रवाह हो। आइए, इस होली पर हम बाहरी रंगों के साथ-साथ अपने अंतर्मन को भी सत्य, प्रेम और सद्भाव के रंग से रंगें, यही इस पावन पर्व का वास्तविक संदेश है। (लेखक टू मीडिया के मुख्य सम्पादक है)

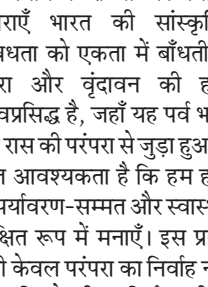

मेक्सिकों में कुख्यात ड्रग माफिया की मौत पर भड़की हिंसा, क्या संदेश देती है ?

रामस्वरूप रावतसरे

मेक्सिको इस समय अपने हालिया इतिहास के सबसे गंभीर सुरक्षा संकटों में से गुजर रहा है। देश के कई राज्यों में अचानक भड़की हिंसा, आगजनी, गोलीबारी, सड़क जाम और व्यापक दहशत ने आम जनजीवन को लगभग ठप कर दिया है। सार्वजनिक परिवहन से लेकर हवाई सेवाएँ तक प्रभावित हुई हैं। बाजार बंद हैं, स्कूलों में छुट्टियाँ घोषित कर दी गई हैं और लोगों को घरों के अंदर रहने की सलाह दी गई है।

इस पूरे घटनाक्रम की जड़ में है मेक्सिको के सबसे कुख्यात ड्रग माफिया एल मेंचो की मौत। एक बड़े सैन्य ऑपरेशन में उसकी मौत के बाद उसके संगठन जालिस्को न्यू जेनरेशन कार्टेल (सीजेएनजी) ने पूरे देश में जवाबी हिंसा छेड़ दी। हालात इतने बिगड़ गए कि भारत, अमेरिका और कनाडा जैसे देशों को भी अपने नागरिकों के लिए सुरक्षा एडवाइजरी जारी करनी पड़ी।

22 फरवरी 2026 की देर रात मेक्सिको के पश्चिमी राज्य जालिस्को के छोटे से कस्बे टपालपा में सेना और सुरक्षा बलों ने एक अत्यंत गोपनीय और बड़े स्तर का ऑपरेशन चलाया। इस ऑपरेशन का मकसद था सीजेएनजी के सरगना एल मेंचो को पकड़ना या मार गिराना।

मुठभेड़ के दौरान एल मेंचो गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तुरंत हेलीकॉप्टर से इलाज के लिए मेक्सिको सिटी ले जाया जा रहा था, लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। जैसे ही यह खबर फैली, सीजेएनजी के लड़ाकों ने बड़े पैमाने पर हिंसक जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। कार्टेल के हथियारबंद गुर्गों ने सड़कों पर गाड़ियाँ जला दीं, हाईवे जाम कर दिए, दुकानों और पेट्रोल पंपों को आग के हवाले कर दिया और सुरक्षा बलों पर हमले किए। देखते ही देखते हालात जालिस्को से निकलकर कई अन्य राज्यों तक फैल गए।

एल मेंचो का असली नाम नेमेसियो रूबेन ओसेगुएरा सर्वेंटेस था। उसका जन्म 1966 में मेक्सिको के मिचोआकान राज्य के एक गरीब गाँव में हुआ था। बेहतर जिंदगी की तलाश में वह 1980 के दशक में अमेरिका चला गया, लेकिन वहाँ अपराध की दुनिया में फँस गया। अमेरिका में वह हेरोइन तस्करी के मामलों में पकड़ा गया, जेल गया और बाद में मेक्सिको डिपोर्ट कर दिया गया। स्वदेश लौटने के बाद उसने कुछ समय तक स्थानीय पुलिस में नौकरी की, लेकिन जल्दी ही संगठित अपराध की ओर मुड़ गया। उसने मिलेनियो कार्टेल के जरिए अपनी पहचान बनाई और फिर 2009 में जालिस्को न्यू जेनरेशन कार्टेल की स्थापना की। कुछ ही वर्षों में सीजेएनजी मेक्सिको का सबसे ताकतवर और हिंसक ड्रग कार्टेल बन गया। यह संगठन अमेरिका और अन्य देशों में फेंटानिल, मेथामफेटामीन, कोकीन और हेरोइन की बड़े पैमाने पर तस्करी करता था।

जानकारी के अनुसार एल मेंचो अपने अत्यंत क्रूर तरीकों, खुलेआम सैन्य टकराव

और भारी हथियारों के इस्तेमाल के लिए कुख्यात था। अमेरिका ने उसकी गिरफ्तारी पर 1.5 करोड़ डॉलर का इनाम घोषित कर रखा था। उस पर अमेरिका में कई गंभीर आपराधिक मुकदमे दर्ज थे और वह दुनिया के सबसे वांछित अपराधियों में शुमार था। मेक्सिको की सेना, नेशनल गार्ड और अन्य केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों ने मिलकर टपालपा में यह विशेष ऑपरेशन अंजाम दिया। खुफिया जानकारी के आधार पर सुरक्षा बलों ने इलाके को घेर लिया और एल मेंचो के ठिकाने पर छापा मारा। भीषण मुठभेड़ के दौरान एल मेंचो घायल हो गया।

इस कार्रवाई में छह संदिग्ध कार्टेल सदस्य मारे गए, तीन सैनिक घायल हुए और दो लोगों को गिरफ्तार किया गया। सुरक्षा बलों ने बड़ी मात्रा में हथियार भी बरामद किए, जिनमें रॉकेट लॉन्चर जैसे अत्याधुनिक हथियार शामिल थे, जो हेलीकॉप्टर गिराने और बख्तरबंद गाड़ियों को तबाह करने में सक्षम हैं। अधिकारियों ने इस ऑपरेशन को जोआक्विन 'एल चापो' गुजमान और इस्माइल जाम्बादा जैसे बड़े ड्रग लॉर्ड्स की गिरफ्तारी के बाद संगठित अपराध पर सबसे बड़ी कार्रवाई बताया।

एल मेंचो की मौत के कुछ ही घंटों के भीतर पूरे क्षेत्र में अराजकता फैल गई। जालिस्को, मिचोआकान, गुआनाहुआतो, तमाउलीपास, गुएरेरो और न्यूवो लियोन जैसे राज्यों में हिंसा की खबरें सामने आईं। 20 से ज्यादा सड़कों पर जलती हुई गाड़ियाँ खड़ी कर हाईवे जाम कर दिए गए। पर्यटन केंद्र पुएर्ता वायार्ता में हालात इतने खराब हो गए कि पर्यटकों ने इसे 'युद्ध जैसे दृश्य' बताया। हवाई अड्डों पर भगदड़ के माहौल में कई अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रद्द करनी पड़ीं

मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शीनबाम ने देशवासियों से शांति बनाए रखने की अपील की और कहा कि केंद्र सरकार सभी राज्यों के साथ मिलकर हालात को काबू में करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा बलों की अतिरिक्त तैनाती की गई है और जल्द ही हालात सामान्य किए जाएँगे। साथ ही उन्होंने यह भी माना कि एल मेंचो की मौत संगठित अपराध के खिलाफ एक बड़ी सफलता है, लेकिन इसके बाद भड़की हिंसा गंभीर चिंता का विषय है।

जालिस्को न्यू जेनरेशन कार्टेल पिछले एक दशक में मेक्सिको का सबसे ताकतवर आपराधिक संगठन बन चुका है। भारी हथियार, सैन्य शैली के काफिले और खुलेआम हिंसा इसके प्रमुख हथकंडे रहे हैं। एल मेंचो की मौत से संगठन को बड़ा झटका लगा है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि इससे हिंसा और अंदरूनी सत्ता संघर्ष बढ़ सकता है।

एल मेंचो की मौत मेक्सिको के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ है। यह संगठित अपराध के खिलाफ बड़ी सफलता जरूर है, लेकिन इसके बाद भड़की हिंसा ने यह साफ कर दिया है कि ड्रग कार्टेल की जड़ें कितनी गहरी हैं। सड़कों पर जलती गाड़ियाँ, बंद बाजार, रद्द उड़ानें और दहशत का माहौल इस बात का संकेत हैं कि मेक्सिको को शांति बहाल करने के लिए अभी लंबा और कठिन संघर्ष करना होगा।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2026 पर विज्ञान संचार के रचनात्मक तरीकों पर कार्यशाला: सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की संयुक्त पहल

संगिनी घोष

विज्ञान को समाज से जोड़ने की नई पहल

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2026 के अवसर पर सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर ने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के सहयोग से "विज्ञान संचार के रचनात्मक तरीकों" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, विज्ञान लेखकों और विद्यार्थियों ने भाग लेकर विज्ञान को आमजन तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने पर विचार-विमर्श किया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान और समाज के बीच संवाद को मजबूत करने के लिए नए और नवोन्मेषी माध्यमों की खोज करना था।

ऐसे देखें तो, यह आयोजन केवल औपचारिक उत्सव नहीं बल्कि विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की गंभीर पहल के रूप में सामने आया।

डिजिटल युग में विज्ञान संवाद

कार्यशाला में डिजिटल प्लेटफॉर्म, दृश्य माध्यम, क्षेत्रीय भाषाओं, पॉडकास्ट और इंटरएक्टिव कंटेंट के माध्यम से विज्ञान संचार को सशक्त बनाने पर जोर दिया गया। साथ ही, गलत सूचना से निपटने और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर चर्चा हुई।

प्रतिभागियों ने जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल और सटीक भाषा में प्रस्तुत करने की चुनौतियों और संभावनाओं पर अपने अनुभव साझा किए।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का महत्व

आयोजकों ने कहा कि आज के सूचना-प्रधान युग में विज्ञान का प्रभावी संचार समाज के जागरूक और विवेकपूर्ण निर्णयों के लिए अनिवार्य है। वैज्ञानिक उपलब्धियों को समझना और उन्हें व्यवहार में लाना ही वास्तविक प्रगति का आधार है।

यह कार्यशाला क्यों महत्वपूर्ण है?

विशेषज्ञों का मानना है कि सशक्त विज्ञान संचार जिज्ञासा, तार्किक सोच और साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। तेजी से बदलती तकनीकी दुनिया में वैज्ञानिक जानकारी का सरल और विश्वसनीय प्रसार अत्यंत आवश्यक है।

ऐसे देखें तो, विज्ञान तब ही सार्थक होता है जब वह प्रयोगशाला से निकलकर समाज तक पहुँचता है।

मुख्य बिंदु

* राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2026 पर कार्यशाला का आयोजन।
* सीएसआईआर-एनआईएस सीपीआर और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की संयुक्त पहल।
* रचनात्मक विज्ञान संचार पर केंद्रित चर्चा।
* डिजिटल और क्षेत्रीय माध्यमों के उपयोग पर जोर।
* वैज्ञानिक सोच और गलत सूचना से निपटने पर बल।
* अनुसंधान और समाज के बीच संवाद को मजबूत करने का उद्देश्य।

आगे की दिशा

विश्लेषकों का मानना है कि यदि विज्ञान संचार को शिक्षा, मीडिया और डिजिटल मंचों से जोड़ा जाए, तो इसका प्रभाव व्यापक और स्थायी हो सकता है। भविष्य में ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान को अधिक सहभागी और समावेशी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

भाषा अंतरालः शब्दों को जोड़ना, दुनिया को जोड़ना

विजय गर्ग

भाषा संचार के लिए एक उपकरण से अधिक है; यह पहचान, संस्कृति, सीखने और सामाजिक संबंध की नींव है। फिर भी दुनिया भर में और विशेष रूप से भारत जैसे बहुभाषी समाजों में भाषा संबंधी अंतर लोगों को विभाजित करता रहता है। ये अंतराल पीढ़ियों, क्षेत्रों, शैक्षिक पृष्ठभूमि और डिजिटल पहुंच के स्तरों के बीच मौजूद हैं। जब भाषाई अंतर समझ को बाधित करते हैं, तो वे अवसरों को सीमित कर सकते हैं, सामाजिक बंधनों को कमजोर कर सकते हैं और असमानता को गहरा कर सकते हैं।

भाषा अंतराल को समझना

भाषा का अंतर तब उत्पन्न होता है जब व्यक्ति या समूह भाषा दक्षता, शब्दावली या भाषायी अनुभव में अंतर के कारण प्रभावी ढंग से संवाद नहीं कर पाते हैं। यह निम्नलिखित के बीच हो सकता हैः

शहरी और ग्रामीण आबादी जहां औपचारिक भाषा शिक्षा तक पहुंच भिन्न होती है

निजी और सरकारी स्कूल के छात्रों को अक्सर अंग्रेजी प्रवीणता से विभाजित किया जाता है

पीढ़ियों में बुजुर्ग क्षेत्रीय भाषाओं में पारंगत हैं और युवा अंग्रेजी या डिजिटल स्लैंग को प्राथमिकता देते हैं

डिजिटल उपयोगकर्ता और गैर-उपयोगकर्ता 2 प्रौद्योगिकी संचालित भाषा विकास द्वारा आकारित

ये अंतराल केवल भाषाई नहीं हैं; वे सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक असमानताओं को दर्शाते हैं।

भाषा और शैक्षिक असमानता

भारत के कई हिस्सों में बच्चे क्षेत्रीय भाषाओं में

शिक्षा प्राप्त करते हैं, लेकिन बाद में उन्हें अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा मिलती है। यह परिवर्तन चुनौतीपूर्ण हो सकता है। जिन छात्रों को अंग्रेजी का प्रारंभिक ज्ञान नहीं होता, उन्हें अक्सर उच्च शिक्षा, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं और नौकरी के अवसरों से जूझना पड़ता है।

साथ ही, अंग्रेजी पर अत्यधिक जोर देने से मातृभाषा को हाशिए पर रखा जा सकता है, सांस्कृतिक जड़ों और समझ कौशल कमजोर हो सकते हैं। शोध से पता चलता है कि अपनी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा से वैचारिक समझ और आत्मविश्वास में सुधार होता है।

इस प्रकार, मुद्दा एक भाषा को दूसरी भाषा के स्थान पर चुनने का नहीं है, बल्कि संतुलित बहुभाषी दक्षता का निर्माण करना है।

डिजिटल भाषा विभाजन

डिजिटल क्रांति ने नई भाषा संबंधी बाधाएं पैदा कर दी हैं। इंटरनेट पर अधिकांश शैक्षिक और व्यावसायिक सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध है। अंग्रेजी से अपरिचित व्यक्तियों को ऑनलाइन शिक्षा, सरकारी सेवाओं और रोजगार संसाधनों तक सीमित पहुंच का सामना करना पड़ता है।

हालाँकि, क्षेत्रीय भाषा सामग्री, आवाज प्रौद्योगिकी और अनुवाद उपकरणों का उदय इस विभाजन को पाटने में मदद कर रहा है।

सांस्कृतिक और पीढ़ीगत अलगाव

भाषा संबंधी अंतर परिवारों और समुदायों के भीतर संबंधों को भी प्रभावित करता है। बुजुर्ग लोग संस्कृति में निहित पारंपरिक अभिव्यक्तियों को पसंद कर सकते हैं, जबकि युवा सोशल मीडिया से प्रभावित होकर संकर भाषा अपनाते हैं। इस बदलाव से गलतफहमी और भावनात्मक दूरी पैदा हो सकती है।

पीढ़ी दर पीढ़ी सामंजस्य बनाए रखने के लिए विकसित संचार शैलियों को अपनाते हुए भाषाई विरासत का संरक्षण करना आवश्यक है।

आर्थिक और व्यावसायिक प्रभाव

भाषा प्रवीणता अक्सर रोजगार योग्यता निर्धारित करती है। अंग्रेजी जैसी व्यापक रूप से प्रयुक्त भाषाओं में प्रवाह वैश्विक अवसरों के द्वार खोल सकता है, जबकि सीमित दक्षता कैरियर विकास को प्रतिबंधित कर सकती है। फिर भी स्थानीय भाषाएं शासन, जमीनी स्तर पर विकास और सामुदायिक सहभागिता में महत्वपूर्ण बनी हुई हैं।

संतुलित भाषा कौशल व्यक्तियों को स्थानीय और वैश्विक स्तर पर प्रभावी ढंग से कार्य करने में सक्षम बनाता है।

भाषा अंतर को पाटना

भाषा संबंधी अंतर को दूर करने के लिए समन्वित प्रयासों की आवश्यकता होती है

बहुभाषी शिक्षा स्कूलों को क्षेत्रीय और वैश्विक भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषा में सीखने को भी बढ़ावा देना चाहिए।

डिजिटल समावेशन क्षेत्रीय भाषाओं में ऑनलाइन सामग्री विकसित करने और अनुवाद उपकरणों को बेहतर बनाने से पहुंच बढ़ सकती है।

सामुदायिक पहल पठन क्लब, सांस्कृतिक कार्यक्रम और कहानी कहने की परंपराएं भाषाई विरासत को संरक्षित कर सकती हैं।

पारिवारिक सहभागिता पारंपरिक और आधुनिक दोनों भाषाओं में बातचीत को प्रोत्साहित करने से संबंध मजबूत होते हैं।

नीति समर्थन सरकारी पहलों को वैश्विक संचार उपकरणों तक पहुंच सुनिश्चित करते हुए भाषाई विविधता का समर्थन करना चाहिए।

निष्कर्ष

भाषा संबंधी अंतर केवल शब्दों के बारे में नहीं है - वे ज्ञान तक पहुंच, सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक समानता को आकार देते हैं। इन अंतरालों को पाटने के लिए समावेशी संचार को बढ़ावा देते हुए भाषाई विविधता का महत्व रखना आवश्यक है। जब समाज बहुभाषिकता को अपनाते हैं, तो वे व्यक्तियों को संस्कृतियों, पीढ़ियों और अवसरों के बीच जुड़ने के लिए सशक्त बनाते हैं।

विवाह के बदलते रूप

डॉ. विजय गर्ग

समाज में समय के साथ कई रीति-रिवाजों और परंपराओं में बदलाव आते रहते हैं। विवाह भी एक ऐसा संस्कार है जो न केवल दो व्यक्तियों को जोड़ता है, बल्कि दो परिवारों और सामाजिक संबंधों को भी जोड़ता है। लेकिन आधुनिक युग में विवाह का स्वरूप तेजी से बदल रहा है।

पुराने समय की शादी

पहले विवाह सादगी, रीति-रिवाज और पारिवारिक परम्पराओं पर आधारित होते थे। गांवों में सभी लोग मिलकर तैयारी करते थे। घर का खाना, रिश्तेदारों की सहभागिता और सादगी भरे आयोजन विवाह के विशेष व्यंजन होते थे। विवाह सामाजिक एकता और प्रेम का प्रतीक होता था।

आधुनिक विवाह की चमक-धमक

आजकल शादी एक बड़ी समारोह की तरह बन गई है। महंगे बैंक्वेट हॉल, डेस्टिनेशन वेडिंग, थीम सजावट, डीजे और फैशन शो जैसे तत्व विवाह को अनोखा बनाते हैं। सोशल मीडिया के प्रभाव से लोग शादियों को शानदार बनाने की दौड़ में लगे हुए हैं।

प्रौद्योगिकी का प्रभाव

डिजिटल न्योता, ऑनलाइन रिलेशनशिप सर्च प्लेटफॉर्म, लाइव स्ट्रीमिंग और ड्रोन फोटोग्राफी विवाह को नया रूप दे रहे हैं। विदेशों में रहने वाले रिश्तेदार भी लाइव प्रसारण के माध्यम से विवाह में शामिल हो सकते हैं।

खर्च और दिखावे की दौड़

विवाह में बढ़ती लागत मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए चिंता का विषय बन रही है। कई बार लोग सामाजिक दबावों के कारण अपनी क्षमता से अधिक खर्च कर लेते हैं, जिससे ऋण और आर्थिक तनाव उत्पन्न हो सकता है।

बदलते सामाजिक मूल्य

आजकल लड़के-लड़की की शिक्षा, रोजगार और पारस्परिक समझ को अधिक महत्व दिया जा रहा है। अंतःप्रजनन और प्रेम विवाह की स्वीकृति भी बढ़ रही है। विवाह को अब केवल रीति-रिवाज ही नहीं बल्कि साझा जीवन का दायित्व और साझेदारी के रूप में देखा जाता है।

सादगी की ओर वापसी का आंदोलन

कुछ परिवार अब सादगीपूर्ण और पर्यावरण के अनुकूल विवाहों को प्राथमिकता दे रहे हैं। लंगर प्रणाली, कम खर्च वाले आयोजन और सामाजिक सेवा से जुड़े विवाह एक सकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाते हैं।

उत्कृष्ट

विवाह का स्वरूप बदलना सामाजिक विकास का स्वाभाविक हिस्सा है। जहां आधुनिकता सुविधा और रंग लाती है, वहीं सादगी, संस्कार और सामाजिक जिम्मेदारी को भी बनाए रखना आवश्यक है। संतुलित और सार्थक विवाह ही एक खुशहाल परिवार और मजबूत समाज की नींव रख सकते हैं। **डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब**

रंग जो दिलों तक उतर जाएँ..

-डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में होली केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और मानवीय संबंधों का जीवंत उत्सव है। यह वह अवसर है जब रंगों के बहाने मन के भीतर जमी धूल को झाड़ने, रिश्तों में आई दरारों को भरने और जीवन में नई ऊर्जा भरने का अवसर मिलता है। होली हमें याद दिलाती है कि जीवन की असली खूबसूरती बाहरी रंगों में नहीं, बल्कि भीतर की भावनाओं में छिपी होती है।

आज का समय तेज़ रफ्तार, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं का है। परिवार साथ रहते हुए भी दूर होते जा रहे हैं। संवाद की जगह औपचारिक संदेशों ने ले ली है और संवेदनाओं की जगह तर्क ने। छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव, अहंकार और गलतफहमियाँ रिश्तों के बीच दीवार खड़ी कर देती हैं। ऐसे में होली एक अवसर बनकर आती है—इन दीवारों को गिराने और अपनत्व के पुल बनाने का।

होली का वास्तविक संदेश क्षमा, स्वीकार और समानता में निहित है। जब हम एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, तो यह प्रतीक होता है कि हम भेदभाव, कटुता और दूरी को पीछे छोड़ रहे हैं। रंगों की यह परंपरा हमें सिखाती है कि जीवन में विविधता ही सुंदरता है। अलग-अलग स्वभाव, विचार और संस्कृतियाँ मिलकर ही समाज को समृद्ध बनाती हैं। यदि हम इन विविधताओं को स्वीकार कर लें, तो अधिकांश विवाद स्वयं समाप्त हो सकते हैं।

मनमुटाव अक्सर संवाद की कमी से जन्म लेते हैं। हम अपनी बात कहने में देर कर देते हैं और दूसरे की बात सुनने का धैर्य खो बैठते हैं। त्योहार संवाद का स्वाभाविक अवसर प्रदान करते हैं। परिवार और मित्र जब एक साथ बैठते हैं, तो दिल की बातें खुलकर सामने आती हैं। एक सच्ची मुस्कान और एक आत्मीय आलिंगन वर्षों की दूरी को मिटा सकता है। होली हमें यही सहजता और खुलेपन का पाठ पढ़ाती है।

डिजिटल युग में जुड़ाव का स्वरूप बदला है। सोशल मीडिया पर शुभकामनाओं की भरमार होती है, लेकिन वास्तविक मिलन कम होता जा रहा है। होली हमें स्क्रीन से बाहर निकलकर वास्तविक संबंधों को प्राथमिकता देने की प्रेरणा देती है। रंगों से सना चेहरा और हँसी से भरा वातावरण उस आत्मीयता को जन्म देता है, जिसे कोई आभासी माध्यम पूरी तरह नहीं दे सकता।

परिवार के संदर्भ में होली का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह पीढ़ियों को जोड़ने का अवसर है। बच्चे जब अपने बड़ों को हँसते-खेलते देखते हैं, तो उनके भीतर भी अपनत्व और सहयोग की भावना विकसित होती है। बुज़ुर्गों के अनुभव और युवाओं का उत्साह मिलकर उत्सव को संपूर्ण बनाते हैं। होली का यह सामूहिक स्वरूप परिवार को मजबूत और जीवंत बनाता है।

सामाजिक स्तर पर भी यह पर्व समरसता का संदेश देता है। जाति, वर्ग, भाषा या आर्थिक स्थिति की दीवारें रंगों के सामने फीकी पड़ जाती हैं। जब पूरा समाज एक साथ उत्सव मनाता है, तो आपसी अविश्वास कम होता है और सहयोग की भावना बढ़ती है। आज के समय में, जब समाज विभिन्न स्तरों पर विभाजन का सामना कर रहा है, होली जैसे पर्व सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने का माध्यम बन सकते हैं।

हालाँकि यह भी सच है कि समय के साथ त्योहारों में दिखावे और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति बढ़ी है। महंगे आयोजन, प्रदर्शन और सोशल मीडिया पर छवि निर्माण की होड़ ने त्योहारों की आत्मा को कहीं-कहीं आच्छादित कर दिया है। हमें यह समझना होगा कि होली का वास्तविक आनंद सादगी, आत्मीयता और सहभागिता में है। जब हम अपेक्षाओं और प्रतिस्पर्धा से मुक्त होकर उत्सव मनाते हैं, तभी उसकी सच्ची अनुभूति होती है।

मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी होली का महत्व कम नहीं है। तनाव और चिंता से भरे जीवन में यह पर्व हमें खुलकर हँसने, गाने और आनंद लेने का अवसर देता है। सकारात्मक भावनाएँ मन को हल्का करती हैं और नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। जब हम गिले-शिकवे भुलाकर आगे बढ़ते हैं, तो भीतर एक शांति और संतोष का अनुभव होता है।

होली आत्ममंथन का भी समय है। यह सोचने का अवसर है कि क्या हमने किसी को अनजाने में आहत किया है? क्या कोई ऐसा संबंध है जिसे हमने समय न देकर कमजोर होने दिया? यदि उत्तर हाँ है, तो यह पर्व सुधार का अवसर देता है। एक छोटी-सी पहल—एक फोन कॉल, एक मुलाकात या एक स्नेहिल संदेश—रिश्तों में नई जान फूंक सकता है।

अंततः, होली हमें यह सिखाती है कि जीवन का असली रंग प्रेम और अपनत्व है। बाहरी रंग कुछ समय बाद फीके पड़ जाते हैं, लेकिन दिलों में भरे स्नेह के रंग स्थायी होते हैं। यदि हम इस त्योहार की भावना को अपने दैनिक जीवन में उतार लें, तो हर दिन एक उत्सव बन सकता है।

आइए, इस होली पर हम यह संकल्प लें कि मनमुटाव को पीछे छोड़ेंगे, संवाद को मजबूत बनाएँगे और रिश्तों को प्राथमिकता देंगे। क्योंकि जब दिल जुड़ते हैं, तभी समाज सशक्त होता है और जीवन सचमुच रंगों से भर उठता है। होली केवल रंगों का नहीं, बल्कि भावनाओं का पर्व है—और यही इसे सबसे खास बनाता है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी

खामोशी से जान लेती सेक्सवर्धक दवाएं

— डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत जैसे समाज में यौन स्वास्थ्य आज भी खुली बातचीत का विषय नहीं है। पुरुषों से अपेक्षा की जाती है कि वे हर हाल में "सक्षम" रहें—चाहे उम्र, तनाव या बीमारी कुछ भी हो। इसी दबाव में डॉक्टर से सलाह लेना कमजोरी मान लिया जाता है, जबकि बिना जांच दवा खाना "समाधान" समझ लिया जाता है। यही चुप्पी सबसे खतरनाक है। लोग अपने शरीर के संकेतों को अनदेखा करते हैं, मानसिक तनाव को दबाते हैं और सामाजिक छवि बचाने के लिए जोखिम उठाते हैं। नतीजा यह होता है कि एक अस्थायी समाधान स्थायी मौत में बदल जाता है। यह केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि एक गहरी सामाजिक असफलता है।

भारत में समय-समय पर सामने आने वाली कुछ मौतें सुर्खियों में आ जाती हैं, लेकिन उनसे जुड़ी असहज सच्चाइयों पर समाज अक्सर चुप्पी साध लेता है। होटल के कमरों, निजी फ्लैटों और बंद दरवाजों के पीछे हुई मौतों को "संदिग्ध परिस्थितियों" कहकर दर्ज कर दिया जाता है और मामला यहीं खत्म मान लिया जाता है। लेकिन सच्चाई यह है कि ऐसी घटनाएं अपवाद नहीं हैं। ये उस समस्या का संकेत हैं, जो देशभर में फैल चुकी है और जिसकी कीमत हज़ारों लोग अपनी जान देकर चुका रहे हैं—बिना चिकित्सकीय सलाह के सेक्सवर्धक दवाओं के बेतहाशा और लापरवाह इस्तेमाल से।

देश में इन दवाओं की उपलब्धता किसी सामान्य टॉनिक की तरह है। मेडिकल स्टोर, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और अनधिकृत चैनलों से ये दवाएं बिना पर्ची, बिना चेतावनी और बिना किसी परामर्श के मिल जाती हैं। न उम्र पूछी जाती है, न पहले से मौजूद बीमारियों का जिक्र होता है, न ही संभावित दुष्प्रभावों की जानकारी दी जाती है। मानो यह दवा नहीं, बल्कि सामाजिक दबाव से निकलने का कोई आसान रास्ता हो। यही आसान रास्ता कई बार सीधे मौत की ओर ले जाता है।

इन दवाओं का असर केवल शारीरिक नहीं होता। हृदय गति, रक्तचाप और नर्वस सिस्टम पर पड़ने वाला प्रभाव किसी भी व्यक्ति के लिए घातक हो सकता है, खासकर तब जब पहले से हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप या अत्यधिक तनाव मौजूद हो। इसके बावजूद इन दवाओं के विज्ञापन मर्दानगी को चुनौती की तरह पेश करते हैं—उम्र को मात देने, क्षमता साबित करने और कमजोरी छिपाने के संदेश खुलेआम परोसे जाते हैं। सवाल यह है कि जब नतीजे जानलेवा हो सकते हैं, तो इस प्रचार की जिम्मेदारी आखिर कौन लेगा?

इस पूरे संकट की जड़ में समाज की वही पुरानी सोच है, जो यौन स्वास्थ्य को आज भी शर्म और चुप्पी के दायरे में रखती है। पुरुषों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे हर हाल में सक्षम रहें, चाहे शरीर साथ दे या नहीं। डॉक्टर से सलाह लेना कमजोरी समझा जाता है, जबकि बिना जांच दवा लेना बहादुरी या समझदारी मान लिया जाता है। यही मानसिक दबाव व्यक्ति को ऐसे फैसले लेने पर मजबूर करता है, जिनकी कीमत जान से चुकानी पड़ सकती है।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि ऐसी मौतों के बाद भी सच्चाई अक्सर सामने नहीं आती। परिवार सामाजिक बदनामी के डर से चुप रहना बेहतर समझता है। मृत्यु प्रमाण-पत्र पर कारण कुछ और लिख दिया जाता है और मामला खत्म हो जाता है। पुलिस के लिए यह एक और "प्राकृतिक मौत" बन जाती है और सिस्टम आगे बढ़ जाता है। लेकिन हर बार जब सच्चाई दबा दी जाती है, तब अगली मौत की जमीन तैयार हो जाती है।

यह केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक त्रासदी नहीं है। यह एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है, जिसे स्वीकार करने से हम लगातार बचते रहे हैं। अगर सच सामने आए, अगर आंकड़े ईमानदारी से इकट्ठा किए जाएं, तो शायद यह साफ दिखे कि ऐसी मौतें सैकड़ों नहीं, बल्कि हज़ारों में हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि इनमें से अधिकांश कभी चर्चा का विषय नहीं बनतीं।

सरकार और स्वास्थ्य तंत्र की भूमिका पर भी गंभीर सवाल उठते हैं। आखिर इन दवाओं की बिक्री पर सख्त नियंत्रण क्यों नहीं है? पर्ची को अनिवार्य क्यों नहीं किया जाता? भ्रामक और आक्रामक विज्ञापनों पर कार्रवाई क्यों नहीं होती? जब किसी दवा के दुष्प्रभाव जानलेवा हो सकते हैं, तो उसके प्रचार और उपलब्धता पर वही सख्ती क्यों नहीं दिखाई जाती, जो अन्य खतरनाक पदार्थों पर होती है? हर घटना के बाद "जांच जारी है" कह देना अब पर्याप्त नहीं है। सवाल यह है कि जांच के नतीजों से नीति क्यों नहीं बनती।

मीडिया की भूमिका भी इस पूरे मामले में दोहरी रही है। एक ओर सनसनीखेज सुर्खियां बनती हैं, निजी जीवन को उछाला जाता है और कुछ दिनों बाद मामला भुला दिया जाता है। दूसरी ओर, कई बार इस विषय को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया जाता है, क्योंकि इसे "असहज" या "संवेदनशील" मान लिया जाता है। जबकि जिम्मेदार पत्रकारिता का अर्थ ही यही है कि वह असहज सवाल पूछे। यौन स्वास्थ्य पर बात करना न अश्लीलता है, न निजी दखल—यह सीधे तौर पर जीवन और मृत्यु से जुड़ा विषय है।

इस बहस में मानसिक स्वास्थ्य को भी अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। प्रदर्शन का दबाव, उम्र का डर, रिश्तों की चिंता और सामाजिक अपेक्षाएं—ये सभी व्यक्ति के मानसिक संतुलन पर असर डालती हैं। जब मानसिक स्वास्थ्य को महत्व नहीं दिया जाता, तो व्यक्ति त्वरित और खतरनाक समाधान की ओर झुकता है। अगर समय रहते सही काउंसलिंग, चिकित्सकीय सलाह और सामाजिक समर्थन मिले, तो कई जानें बचाई जा सकती हैं।

यह मान लेना एक बड़ी भूल होगी कि यह समस्या अपने आप खत्म हो जाएगी। जब तक इस पर खुलकर बात नहीं होगी, जब तक सख्त नियम नहीं बनेंगे और जब तक समाज अपनी सोच नहीं बदलेगा, तब तक ऐसी मौतें होती रहेंगी। यह एक खामोश संकट है, जो धीरे-धीरे महामारी का रूप ले सकता है—ऐसी महामारी, जो आंकड़ों में नहीं दिखेगी, लेकिन परिवारों को अंदर से तोड़ देगी।

अब वक्त आ गया है कि इस चुप्पी को तोड़ा जाए। यौन स्वास्थ्य को सामान्य स्वास्थ्य की तरह देखा जाए। डॉक्टर से सलाह लेना कमजोरी नहीं, बल्कि जिम्मेदारी माना जाए। सरकार को सख्त रेगुलेशन लागू करने होंगे, मीडिया को अपने सवाल तेज करने होंगे और समाज को शर्म छोड़नी होगी। हर ऐसी मौत एक चेतावनी है। सवाल सिर्फ यह नहीं है कि मौत कैसे हुई, बल्कि यह है कि अगली मौत रोकने के लिए हमने क्या किया।

अगर अब भी आंखें मूंद ली गईं, तो आने वाले समय में ऐसी मौतें खबर नहीं बनेंगी। वे बस एक और आंकड़ा बन जाएंगी—और उस चुप्पी की जिम्मेदारी हम सभी पर होगी।

54वीं स्टेट पुलिस राइफल शूटिंग कॉम्पिटिशन शुरू हुई

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : 54वीं स्टेट पुलिस राइफल शूटिंग कॉम्पिटिशन, जो 26.02.2026 को शुरू हुई थी, आज दोपहर बैरी में पुलिस ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में शुरू हुई। एडिशनल डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (लॉ एंड ऑर्डर) श्री संजय कुमार चीफ गेस्ट के तौर पर इस मौके पर मौजूद थे और उन्होंने एक रंगारंग परेड में हिस्सा लेने वालों का स्वागत किया। उन्होंने अलग-अलग कैटेगरी में सबसे अच्छा परफॉर्म करने वाले कॉम्पिटिटर और टीमों को ट्रॉफी और कैश प्राइज दिए। अपने भाषण में, चीफ गेस्ट श्री संजय कुमार ने सभी कॉम्पिटिटर को हिस्सा लेने के लिए धन्यवाद दिया और सफल कॉम्पिटिटर को बधाई दी। ओडिशा पुलिस की राइफल शूटिंग के फील्ड में ग्लोबल पहचान है। चीफ गेस्ट श्री संजय कुमार ने कॉम्पिटिटर को अपनी अच्छी प्रैक्टिस जारी रखने और भविष्य में होने वाले ऑल-इंडिया पुलिस कॉम्पिटिशन में और ज्यादा सफलता हासिल करने की सलाह दी।

गौरतलब है कि इस स्टेट लेवल कॉम्पिटिशन में अलग-अलग पुलिस जिलों, बटालियन और जगहों से 16 टीमों और 269 कॉम्पिटिटर ने हिस्सा लिया था। यह कॉम्पिटिशन कुल तीन कैटेगरी राइफल, रिवॉल्वर/पिस्टल और कार्बाइन/स्टंगन में ऑर्गनाइज किया गया था।

अवॉर्ड सेरेमनी के दौरान, अलग-अलग कैटेगरी में सबसे अच्छा परफॉर्म करने वाले कॉम्पिटिटर और टीमों को ट्रॉफी और कैश प्राइज़ दिए गए। राइफल कैटेगरी में, SOG, भुवनेश्वर के हवलदार विनोद महाराणा को बेस्ट राइफलमैन, SOG, भुवनेश्वर के असिस्टेंट कमांडेंट रजत पटनायक को सेकंड बेस्ट राइफलमैन और ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट के कांस्टेबल दीपक कुमार डाकुआ को थर्ड बेस्ट राइफलमैन का अवॉर्ड दिया गया।

इसी तरह, राइफल हार्डलाइन ट्रॉफी SSBN हाउंड्स टीम ने जीती, जबकि राइफल रनर-अप ट्रॉफी OSAF पैंथर ने और राइफल चैंपियनशिप ट्रॉफी SOG, भुवनेश्वर टीम ने जीती।

100 यार्ड राइफल स्टैंडिंग पोजीशन ट्रॉफी कांस्टेबल दीपक कुमार डाकुआ ने, 200 यार्ड राइफल शूटिंग (DGP ट्रॉफी) स्वपन कुमार सरकार ने और 300 यार्ड राइफल शूटिंग (ADGP-SAP ट्रॉफी) हवलदार रंजीत थापा ने जीती।

300 यार्ड स्नैप शूटिंग अवॉर्ड SOG, भुवनेश्वर के असिस्टेंट कमांडेंट रजत पटनायक को दिया गया। रिवॉल्वर/पिस्टल कैटेगरी में, बेस्ट रिवॉल्वरमैन ट्रॉफी SOG, भुवनेश्वर के असिस्टेंट कमांडेंट मानस रंजन पांडा ने जीती, दूसरी और तीसरी बेस्ट रिवॉल्वरमैन ट्रॉफी कांस्टेबल अजीत कुमार साहू और हवलदार क्षीरधर साहू ने जीतीं।

रिवॉल्वर हार्डलाइन ट्रॉफी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट टीम ने जीती, रनर-अप ट्रॉफी OSAP पैंथर ने जीती और रिवॉल्वर चैंपियनशिप ट्रॉफी SOG, भुवनेश्वर ने जीती।

15, 25, 30 और 50 यार्ड पिस्टल/रिवॉल्वर शूटिंग ट्रॉफी असिस्टेंट कमांडेंट मानस रंजन पांडा, हवलदार क्षीरधर साहू, हवलदार तन्मय कुमार म्हंसिर और कांस्टेबल अजीत कुमार साहू ने जीतीं।

इसी तरह, स्टेन गन कैटेगरी में, स्टेन चैंपियनशिप ट्रॉफी SOG, भुवनेश्वर ने जीती और स्टेन रनर-अप ट्रॉफी OSAP पैंथर ने जीती।

असिस्टेंट कमांडेंट मानस रंजन पांडा को बेस्ट स्टेन शूटर और हवलदार बेकची चरण कंडी को सेकंड बेस्ट स्टेन शूटर का अवॉर्ड दिया गया।

इसी तरह, SOG, भुवनेश्वर ने राइफल, रिवॉल्वर और स्टेन गन कैटेगरी में सबसे ज़्यादा मार्क्स हासिल किए और "चैंपियनशिप ट्रॉफी" जीती।

इस मौके पर, श्री एस.पी. तमांग, कमांडेंट, 4th I.R. बटालियन, देवगढ़, श्री कैलाश चंद्र बलवंतराव, असिस्टेंट कमांडेंट 6th I.R. बटालियन, खुर्दा, श्री आर.आर.आर. रेड्डी, इंस्पेक्टर, OSAP, 8th बटालियन छत्रपुर, हवलदार श्री जितेन कुमार प्रधान, 1st OSAP, ढेंकनाल को सम्मानित किया गया।

आज के समापन समारोह में एडिशनल डायरेक्टर जनरल ऑफ़ सिक्योरिटी (SAP) श्री राजेश कुमार, IGP (SAP) श्री गजविये सतीश कुमार, कमांडेंट PTI, बेरी श्री अशोक कुमार देहुरी, कमांडेंट 6th OSAP, कटक श्री सूर्य नारायण मल्लिक, कमांडेंट 2nd बटालियन, झारसुगुड़ा श्री प्रसाद तमांग, स्टेट पुलिस हेडक्वार्टर की स्पोर्ट्स ऑफिसर नीला माधव स्वैन और कई सीनियर पुलिस ऑफिसर शामिल हुए।

श्री आईमाता जी मंदिर बडेर कोरेमुला में होली महोत्सव 2 व 3 मार्च को

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबाद कोरेमुला स्थित श्री आईमाता मंदिर में सीरवी समाज बन्धुओं के सानिध्य में होली महोत्सव के पावन अवसर पर 2 दिवसीय होली महोत्सव का कार्यक्रम 2 व 3 मार्च पूजा-अर्चनाकर, होली दहन, बच्चों की ढूंढ, रंगारंग गैर नृत्य कार्यक्रम के साथ आयोजित किया जाएगा।

प्रेस विज्ञप्ति में संरक्षक प्रभुराम परिहारिया, अध्यक्ष कालुराम काग, सचिव डायाराम लचेटा ने बताया कि हर वर्ष के भांति समाज बन्धुओं के सानिध्य में 2 दिवसीय होली महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। सोमवार 2 मार्च रात्रि 7.15 बजे भोजन प्रसादी की व्यवस्था रहेगी। सोमवार 2 मार्च सायं 5.15 बजे पुजा-अर्चनाकर, आईमाता जी की आरती के पश्चात 6.15 बजे होली दहन एवं मंगलवार 3 मार्च को प्रातः वेला में पूजा-अर्चनाकर 9.15 बजे से बच्चों की ढूंढ का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। मध्यान 12.15 बजे से समाज बन्धुओं के लिए भोजन-प्रसादी की व्यवस्था मंदिर प्रांगण में रहेगी। संरक्षक प्रभुराम परिहारिया, अध्यक्ष कालुराम काग, सचिव डायाराम लचेटा ने समाज बन्धुओं से निवेदन किया है उपरोक्त कार्यक्रम में होली गुलाल से खेली जाएगी। राजस्थानी वेष-भूषा में सपरिवार समय पर पधारकर कार्यक्रम का लाभ लेवे।

सनातन और धर्म : पृथ्वी की सतत व्यवस्था का दर्शन

आज सर्वत्र "सनातन" की चर्चा हो रही है। यह चर्चा अब केवल भारत तक सीमित नहीं रही बल्कि वैश्विक विमर्श का हिस्सा बन चुकी है। ऐसे समय में आवश्यक है कि हम सनातन को सामुदायिक चश्मे से नहीं बल्कि दार्शनिक और व्यवस्थागत दृष्टि से समझें। सनातन क्या है? सनातन का आशय एक ऐसी व्यवस्था से है जो समय के हर पड़ाव पर चलती आ रही है, चल रही है और समय के हर पड़ाव पर चलती रहेगी। दूसरे शब्दों में इसे कह सकते हैं सनातन जो हर काल परिस्थिति और समय के पड़ाव पर स्थायी है, सत्य है. और सरल शब्दों में कह सकते हैं जो हर काल परिस्थिति और समय के पड़ाव पर टिकाऊ है, और इसी टिकाऊ को अंग्रेजी में सस्टेनेबल कहते हैं. मतलब सनातन वह जो सस्टेनेबल है या इसे ऐसे कहें सस्टेनेबिलिटी की बात करना मतलब सनातन की बात करना।

गहराई में समझना है कि सनातन क्या है तो इसे और आगे समझते हैं. यदि हम शब्दकोश में जाएँ तो सनातन के अर्थ मिलते हैं चिरकालिक, सार्वकालिक, अक्षय, अनंत, अनादि, अविनाशी, शाश्वत, सतत, पुनर्चक्रीय। अंग्रेजी में इसे इटरनल कहा जाता है। जब भी मैं सनातन के अर्थ पर विचार करता हूँ, तो मुझे यही भाव मिलता है निरंतरता, सततता और पुनर्जनन की क्षमता।

अब आते हैं धर्म पर कि धर्म क्या है? चूंकि सनातन की चर्चा धर्म के संदर्भ में हो रही है, इसलिए पहले यह समझना आवश्यक है कि धर्म क्या है। धर्म की सबसे महत्वपूर्ण परिभाषा है मूल चरित्र। जैसे अग्नि का धर्म है जलना, जल का धर्म है शीतलता। तो प्रश्न है पृथ्वी का धर्म क्या है? उत्तर है सततता, सनातन। पृथ्वी अपनी प्राकृतिक व्यवस्थाओं के माध्यम से अपनी चिरकालिकता, सार्वकालिकता, नश्वरता, अक्षयपन, अनंत , अनादि, अविनाशी, शाश्वत चरित्र, सततता, पुनर्चक्रीयता और संतुलन बनाए रखती है। जन्म और विनाश का चक्र, ऋतुओं का परिवर्तन, जलचक्र, जैविक पुनर्जनन ये सभी पृथ्वी की सनातन व्यवस्था के उदाहरण हैं। इसलिए मेरा मानना है कि पृथ्वी का मूल धर्म सनातन है अर्थात वह व्यवस्था जो स्वयं को पुनर्चक्रीय संतुलन में बनाए रखती हुए पृथ्वी की और इस पर फल फूल रहे जीवन चक्र की सततता बनाये रखती है।

अब समझते हैं धर्म और समुदाय और धर्म के बीच का अंतर। आज जिस "धर्म" की चर्चा लोकप्रचलित रूप में होती है, वह अक्सर समुदाय आधारित पहचान के रूप में समझा जाता है परंतु समुदाय धर्म नहीं है. वह एक पंथ है, एक जीवन-पद्धति है, जो अपने समूह की सततता बनाए रखने का प्रयास करती है।

जो भी समुदाय अपनी जीवन-व्यवस्था को पृथ्वी के मूल चरित्र अर्थात पुनर्चक्रीय संतुलन के अनुरूप ढालता है, वह टिकता है। जो पृथ्वी की मूल व्यवस्था से असंगत हो जाता है, वह इतिहास में क्षीण हो जाता है। या यूँ कहें कि जिसकी और जिसके समूह की प्रकृति या चरित्र पृथ्वी के मूल चरित्र ₹सनातन₹ की धुन और संगीत से संगत होगा, वह लंबा चलेगा नहीं तो वह बीच रास्ते में दम तोड़ देगा. इस दृष्टि से देखें तो सनातन किसी एक समुदाय का निजी अधिकार नहीं है; यह पृथ्वी की व्यवस्था का नाम है।

यदि कोई कहता है कि भारत का राष्ट्रीय धर्म सनातन है तो इसे सांप्रदायिक अर्थ में नहीं बल्कि इस दार्शनिक अर्थ में समझना चाहिए। विस्तार से कहें तो केवल भारत ही नहीं, पूरी पृथ्वी का मूल धर्म सनातन है क्योंकि पृथ्वी स्वयं पुनर्चक्रीय और सतत व्यवस्था पर आधारित है। इसलिए जो भी धर्म, पंथ या सामाजिक व्यवस्था सततता बनाए रखती है, पुनर्चक्रीय संतुलन का पालन करती है, प्रकृति के साथ सामंजस्य रखती है, वह उस सीमा तक सनातन है।

"हिन्दू" शब्द का दार्शनिक संदर्भ समझें तो आज जिसे "हिन्दू" कहा जाता है, वह मूलतः भौगोलिक पहचान थी सिंधु नदी के इस पार रहने वाले लोग। कालांतर में इसे सामुदायिक पहचान तक सीमित कर दिया गया। यदि भौगोलिक दृष्टि से देखें तो सिंधु के इस पार रहने वाले सभी लोग चाहे वे मुस्लिम हों, सिख हों, ईसाई हों, बौद्ध हों या जैन उसी सांस्कृतिक भूभाग के उत्तराधिकारी हैं अतः ये सब इस हिसाब से हिन्दू ही हैं। इसलिए सनातन को धार्मिक परिभाषा में सीमित करना उसकी व्यापकता को कम करना है।

सनातन का मूल तत्व है पुनर्चक्रीकरण। प्रकृति से लेना और उसे पुनः लौटाना। संतुलन बनाए रखना। आज विश्व जिस अवधारणा को "सर्कुलर इकॉनमी" कहता है, वह सनातन के सिद्धांत से अलग नहीं है। प्रकृति के प्रति आदर, संसाधनों का संतुलित उपयोग, और पुनर्जनन यही सनातन का आर्थिक स्वरूप है। पश्चिम का जागरण और एसडीजी की बात करें तो आज संयुक्त राष्ट्र ने जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं उन्हें कहा गया है सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल। इसे दुसरे शब्दों में कहें तो सस्टेनेबल अर्थात टिकाऊ और टिकाऊ अर्थात सनातन। मतलब संयुक्त राष्ट्र ने भी इतना घूमने के बाद जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं वह लक्ष्य सनातन ही है.

COP (कांफ्रेंस ऑफ़ पार्टीज) जैसे वैश्विक सम्मेलन जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संतुलन पर विचार करने के लिए आयोजित किए जा रहे हैं।

जिस प्रकृति को भारत की धरती ने हजारों वर्षों से ईश्वर का स्वरूप मानकर संरक्षित किया, वही सिद्धांत आज वैश्विक नीति-निर्माण का आधार बन रहा है।

जिसे हमने धर्म का रूप दिया था, उसे आज विज्ञान और नीति की भाषा में सस्टेनेबल डेवलपमेंट कहा जा रहा है।

इन सबका लब्बोलुबाब यही है कि सनातन किसी धार्मिक पहचान का नाम नहीं है। सनातन वह व्यवस्था है जो सततता की बात करती है, जो पुनर्चक्रीय है, जो प्रकृति-संगत है, जो पृथ्वी-संगत है, जो संतुलित है और समय की हर परीक्षा में टिकाऊ है। यदि हम सनातन को पृथ्वी के धर्म के रूप में समझें तो यह विभाजन का नहीं, समन्वय का दर्शन बन जाता है और सनातन का अर्थ बन जाता है संतुलन, सततता और पुनर्जनन। इसलिए जब मानव व्यवस्था पृथ्वी की इस मूल लय के साथ तालमेल बैठाती है, तभी वह वास्तव में सनातन धर्म का पालन कर रही होती है।

- पंकज जायसवाल

अमेरिका-इज़रायल के कथित संयुक्त ऑपरेशन एपिक फ्यूरी/रोरिंग लायन और ईरान के सर्वोच्च नेता की मृत्यु- पश्चिम एशिया से वैश्विक सुरक्षा तक के प्रभावों का समग्र विश्लेषण

- मध्य पूर्व में विस्फोटक मोड़- ईरान पर अमेरिका- इजरायल के संयुक्त हमले, खामेनेई की मृत्यु और वैश्विक भू-राजनीति का नया संकट

- पश्चिम एशिया में शक्ति-संतुलन अत्यंत नाजुक है, एक उच्च- प्रोफ़ाइल लक्षित कार्रवाई पूरे क्षेत्र को अस्थिर कर सकती है, आने वाले सप्ताह निर्णायक होंगे -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर रविवार 1 मार्च 2026 को मध्य- पूर्व और विश्व राजनीति में जिस खबर ने भू-राजनीतिक हलचल मचा दी, वह थी अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर संयुक्त हवाई हमले, जिन्हें 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी' और 'ऑपरेशन रोरिंग लायन' (शेर की दहाड़) नाम दिया गया, उसने वैश्विक शक्ति संतुलन को झकझोर दिया। इन हमलों में ईरान के सैन्य अड्डों और रणनीतिक प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया गया और ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मृत्यु की खबर ने पूरे विश्व को स्तब्ध कर दिया। यह परिदृश्य तथ्यात्मक रूप से स्थापित हो गया है, यह केवल एक सैन्य घटना नहीं बल्कि एक युगांतकारी राजनीतिक परिवर्तन होगा। इतिहास कभी-कभी ऐसे मोड़ों पर आकर ठहर जाता है जहाँ घटनाएँ केवल क्षेत्रीय नहीं रहतीं, बल्कि पूरी मानव सभ्यता की दिशा बदलने की क्षमता रखती हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि आधिकारिक पुष्टि, प्रतिपुष्टि और दावों- प्रतिदावों के बीच यह घटना केवल एक व्यक्ति के निधन का प्रश्न नहीं है; यह पश्चिम एशिया की शक्ति-संतुलन संरचना, इस्लामी जगत की राजनीति, ऊर्जा बाज़ार, समुद्री व्यापार मार्गों, परमाणु प्रसार और वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव डालने वाली संभावित भू-राजनीतिक भूकंप रेखा है। ईरान के सर्वोच्च नेता की भूमिका केवल धार्मिक या प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि राज्य की सामरिक- राजनीतिक दिशा, क्षेत्रीय नेटवर्क और सुरक्षा सिद्धांत के केंद्र में रही है। इसलिए इस घटना के प्रभावों का आकलन बहु-स्तरीय दृष्टिकोण से करना आवश्यक है। सबसे पहले, पश्चिम एशिया के सामरिक परिदृश्य को समझना होगा। इज़रायल और संयुक्त राज्य अमेरिका लंबे समय से ईरान की क्षेत्रीय नीति, विशेषकर लेबनान, सीरिया, इराक और यमन में उसके प्रभाव को अपनी सुरक्षा के लिए चुनौती मानते रहे हैं। यदि कथित ऑपरेशन वास्तव में हुआ और उसके परिणामस्वरूप ईरान के सर्वोच्च नेता की मृत्यु हुई, तो यह केवल टारगेटेड स्ट्राइक नहीं बल्कि प्रतिरोध-धुरी के वैचारिक और संगठनात्मक केंद्र पर सीधा प्रहार माना जाएगा। इसका तत्काल प्रभाव ईरान के भीतर राजनीतिक स्थिरता और सत्ता-हस्तांतरण प्रक्रिया पर पड़ेगा। ईरान की संवैधानिक व्यवस्था के तहत विशेषज्ञों की परिषद नए सर्वोच्च नेता का चयन करती है, परंतु संक्रमण काल में अस्थिरता शक्ति-संघर्ष और सुरक्षा बलों की भूमिका निर्णायक हो सकती है।

साथियों बात अगर हम अरब देशों और खाड़ी क्षेत्र की प्रतिक्रिया को समझने की करें तो स्वाभाविक रूप से सतर्क और संतुलित रही है। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और क़तर जैसे देश पिछले कुछ वर्षों में ईरान के साथ संवाद और तनाव-प्रबंधन की दिशा में कदम बढ़ा रहे थे। वे प्रत्यक्ष युद्ध या व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष से बचना चाहते हैं क्योंकि उनकी अर्थव्यवस्था ऊर्जा निर्यात, वैश्विक निवेश और स्थिरता पर निर्भर है। यदि ईरान में सत्ता-संतुलन अस्थिर होता है या प्रतिशोधी हमलों की श्रृंखला शुरू होती है, तो खाड़ी के तेल-गैस प्रतिष्ठान, समुद्री मार्ग और ड्रोन/मिसाइल हमलों के खतरे में आ सकते हैं। 2019 में सऊदी तेल प्रतिष्ठानों पर हमलों की स्मृति अभी ताज़ा है; इसलिए खाड़ी देश खुली प्रतिक्रिया देने के बजाय बैक-चैनल कूटनीति को प्राथमिकता देंगे। इस्लामी जगत की व्यापक प्रतिक्रिया भी बहुस्तरीय होगी। इस्लामी सहयोग संगठन के सदस्य देशों के बीच ईरान को लेकर मतभेद हैं, कुछ देश उसे शिया नेतृत्व के रूप में देखते हैं, कुछ क्षेत्रीय शक्ति- प्रतिस्पर्धी के रूप में। फिर भी किसी संप्रभु देश के सर्वोच्च नेता की लक्षित हत्या का आरोप अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के प्रश्न उठाता है। ओआईसी के मंच पर कड़ी शब्दावली के प्रस्ताव आ सकते हैं, परंतु सामूहिक सैन्यप्रतिक्रिया की संभावना कम है। अधिक संभावना यह है कि सदस्य देश शांति-आह्वान, संयम और संयुक्त राष्ट्र में बहस की दिशा में आगे बढ़ें।

साथियों बात अगर हम भारत के लिए इस स्थिति को समझने की करें तो, यह संकट केवलआर्थिक नहीं बल्कि रणनीतिक और मानवीय आयाम भी रखता है। खाड़ी देशों में लाखों भारतीय काम करते हैं। संयुक्त अरब अमीरात, कतर, ओमान और सऊदी अरब में बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी रहते हैं। यही कारण है कि भारत सरकार ने अपने नागरिकों के लिए एडवाइजरी जारी कर सतर्कता बरतने और अनावश्यक यात्रा से बचने की सलाह दी है। यह कदम बताता है कि स्थिति केवल सैन्य नहीं बल्कि नागरिक सुरक्षा का भी प्रश्न बन चुकी है। यदि संघर्ष बढ़ता है, तो भारत को ऑपरेशन राहत जैसे निकासी अभियानों क़ी पुनरावृत्ति करनी पड़ सकती है।

तो वहीं शिक्षा क्षेत्र पर भी इस संकट का प्रभाव दिखाई दे रहा है। सेंट्रल बोर्ड ऑफ़ सेकेंडरी एजुकेशन (सीबीएसई) द्वारा मध्य पूर्व के कई देशों में 10वीं और 12वीं की परीक्षाएँ स्थगित करने का निर्णय इस बात का संकेत है कि क्षेत्रीय अस्थिरता अब नागरिक जीवन के मूल ढांचे को प्रभावित कर रही है। यूएई, कतर और ओमान में हजारों भारतीय छात्र सीबीएसई से संबद्ध स्कूलों में पढ़ते हैं। परीक्षा स्थगन केवल शैक्षणिक निर्णय नहीं, बल्कि सुरक्षा प्राथमिकता का संकेत है। यह बताता है कि संघर्ष का प्रभाव सीमाओं से परे सामाजिक ताने-बाने तक पहुँच चुका है। यह ऊर्जा-आयातक भी हैं और पश्चिम एशिया में बड़े प्रवासी समुदाय रखते हैं, संतुलित कूटनीति आवश्यक होगी। भारत पारंपरिक रूप से सभी पक्षों के साथ संवाद बनाए रखने की नीति अपनाता रहा है। तेल- आपूर्ति, समुद्री मार्गों की सुरक्षा और प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा प्राथमिकता होगी। एशियाई शक्तियाँ व्यापक युद्ध से बचाव चाहेंगी क्योंकि उनकी आर्थिक वृद्धि वैश्विक स्थिरता पर निर्भर है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक स्तरपर प्रश्न उठने को समझने की करें तो क्या यह घटना राज्य-प्रायोजित लक्षित हत्या की नई मिसाल बनेगी? यदि यह सिद्ध होता है कि अमेरिका- इज़रायल ने संयुक्त अभियान में ऐसा किया, तो अंतरराष्ट्रीय मानदंडों, संयुक्त राष्ट्र चार्टर और क्षेत्रीय स्थिरता के सिद्धांतों पर व्यापक बहस होगी। यूरोपीय शक्तियाँ जैसे फ्रांस, जर्मनी और यूनाइटेड किंगडम संयम और कूटनीतिक समाधान पर ज़ोर देंगी। रूस और चीन इस घटना को अमेरिकी-पश्चिमी हस्तक्षेप वाद के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं और ईरान के साथ सामरिक-आर्थिक सहयोग बढ़ाने का अवसर देख सकते हैं। इससे वैश्विक शक्ति-ध्रुवीकरण और तेज हो सकता है।

साथियों बात अगर हम ऊर्जा बाज़ार पर प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण होगा इसको समझने की करें तो, ईरान होर्मुज़ जलडमरूमध्य के निकट स्थित है, जहाँ से वैश्विक तेल आपूर्ति का बड़ा हिस्सा गुजरता है। यदि प्रतिशोध में ईरान या उससे संबद्ध समूह इस समुद्री मार्ग को बाधित करने की कोशिश करते हैं, तो तेल की कीमतों में तीव्र उछाल संभव है। इससे वैश्विक मुद्रास्फीति, विकास दर और आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित होगी। भारत, चीन, यूरोप और अन्य आयातक देश ऊर्जा-सुरक्षा की वैकल्पिक रणनीतियाँ सक्रिय करेंगे। समुद्री बीमा प्रीमियम बढ़ सकते हैं, नौसैनिक तैनाती बढ़ सकती है और व्यापारिक जहाजों की आवाजाही प्रभावित हो सकती है। सुरक्षा दृष्टि से सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या संघर्ष सीमित रहेगा या व्यापक क्षेत्रीय युद्ध का रूप ले सकता है। ईरान के पास पारंपरिक सैन्य क्षमताओं के साथ-साथ ड्रोन, मिसाइल और क्षेत्रीय सहयोगी नेटवर्क हैं। लेबनान में, सीरिया में, इराक में और यमन में सक्रिय समूह संभावित प्रतिशोधी कार्रवाई कर सकते हैं। इज़रायल पहले से ही बहु- मोर्चीय सुरक्षा चुनौतियों का सामना करता रहा है; ऐसे में उत्तरी, दक्षिणी और साइबर मोर्चों पर तनाव बढ़ सकता है। अमेरिका की क्षेत्रीय सैन्य उपस्थिति विशेषकर खाड़ी में नौसैनिक ठिकाने, उच्च सतर्कता पर रहेंगे। यदि प्रत्यक्ष अमेरिकी- ईरानी मुठभेड़ होती है, तो यह 2020 में जनरल क़ासिम सुलेमानी की हत्या के बाद के संकट से कहीं अधिक व्यापक हो सकती है।

साथियों बात अगर हम यह संघर्ष कब तक चलेगा? इसको समझने की करें तो इस प्रश्न का उत्तर कई कारकों पर निर्भर है। पहला, ईरान के भीतर सत्ता- हस्तांतरण कितना सुचारु होता है। यदि नया नेतृत्व त्वरित और संगठित रूप से उभरता है, तो वह रणनीतिक धैर्य दिखाते हुए सीमित प्रतिशोध याप्रतीकात्मक प्रतिक्रिया के बाद कूटनीतिक मार्ग चुन सकता है। दूसरा, अमेरिका- इज़रायल की रणनीति क्या है?, क्या यह एकबारगी ऑपरेशन था या व्यापक अभियान का हिस्सा? तीसरा, मध्यस्थता की संभावनाएँ, क्या क्षेत्रीय शक्तियाँ या संयुक्त राष्ट्र सक्रिय भूमिका निभाते हैं? चौथा, घरेलू राजनीति—अमेरिका, इज़रायल और ईरान में जनमत और चुनावी गणनाएँ निर्णयों को प्रभावित करेंगी? क्या यह और बढ़ेगा? जोखिम अवश्य है। यदि किसी भी पक्ष की प्रतिक्रिया में नागरिक हताहत बढ़ते हैं या पवित्र स्थलों/रणनीतिक प्रतिष्ठानों पर हमले होते हैं, तो जनभावनाएँ उग्र हो सकती हैं। सोशल मीडिया और सूचना-युद्ध भी तनाव को भड़का सकते हैं। साइबर हमले, वित्तीय प्रतिबंधों की तीव्रता, और प्रॉक्सी संघर्षों का विस्तार ये सभी ग्रे-ज़ोन युद्ध के तत्व हैं जो बिना औपचारिक युद्ध-घोषणा के लंबे समय तक चल सकते हैं। ऐसी स्थिति महीनों या वर्षों तक अस्थिरता बनाए रख सकती है, भले ही पूर्ण-स्तरीय युद्ध न हो।

साथियों बात अगर हम इस परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र और प्रमुख शक्तियों की भूमिका निर्णायक है इसको समझने की करें तो, सुरक्षा परिषद में आपात बैठकें, स्वतंत्र जांच की मांग, और युद्धविराम के प्रस्ताव सामने आ सकते हैं। परंतु वीटो- राजनीति के कारण ठोस कार्रवाई कठिन हो सकती है। क्षेत्रीय स्तर पर ओमान, क़तर या तुर्की जैसे देश मध्यस्थता की कोशिश कर सकते हैं। बैक- चैनल संवाद, कैदियों की अदला- बदली, और समुद्री सुरक्षा समझौते तनाव कम करने के सटीक उपकरण बन सकते हैं। वहीं वैचारिक और मनोवैज्ञानिक आयाम भी महत्वपूर्ण हैं। ईरान के भीतर यह घटना शहादत के आख्यान के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है, जिससे राष्ट्रीय एकता और प्रतिरोध की भावना मजबूत हो। दूसरी ओर, यदि जनता आर्थिक दबावों और युद्ध-जोखिम से चिंतित है, तो वे स्थिरता और कूटनीति की मांग कर सकते हैं। इज़रायल और अमेरिका में भी सुरक्षा-आधारित तर्क और अंतरराष्ट्रीय कानून- आधारित आलोचना के बीच बहस तेज होगी। यह बहस वैश्विक स्तर पर लक्षित हत्याओं, ड्रोन-युद्ध और संप्रभुता के सिद्धांतों पर नए मानदंड तय कर सकती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि यह संकट हमें याद दिलाता है कि पश्चिम एशिया में शक्ति- संतुलन अत्यंत नाजुक है। एक उच्च-प्रोफ़ाइल लक्षित कार्रवाई पूरे क्षेत्र को अस्थिर कर सकती है। आने वाले सप्ताह निर्णायक होंगे, क्या प्रतिक्रियाएँ सीमित और नियंत्रित रहेंगी, या प्रतिशोध-चक्र तेज होगा। यदि कूटनीति सक्रिय और समन्वित रही, तो यह संकट सीमित अवधि में नियंत्रित हो सकता है। यदि भावनाएँ और रणनीतिक गलत-आकलन हावी हुए, तो यह लंबा, बहु-स्तरीय और वैश्विक प्रभाव वाला संघर्ष बन सकता है। विश्व नेताओं की सतर्क प्रतिक्रियाएँ संकेत देती हैं कि सभी पक्ष जोखिमों से अवगत हैं। ऊर्जा-बाज़ार, समुद्री व्यापार, परमाणु प्रसार, और क्षेत्रीय प्रॉक्सी-नेटवर्क इन सबके कारण यह केवल क्षेत्रीय घटना नहीं, बल्कि वैश्विक सुरक्षा का प्रश्न है। इसलिए आने वाले दिनों में संयम, संवाद और बहुपक्षीय कूटनीति ही वह मार्ग है जो इस संभावित संकट को व्यापक युद्ध में बदलने से रोक सकता है। पश्चिम एशिया की स्थिरता केवल स्थानीय मुद्दा नहीं; यह वैश्विक शांति, आर्थिक संतुलन और अंतरराष्ट्रीय कानून की विश्वसनीयता की कसौटी भी है।

- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

यह युद्ध नहीं, मानवता का सार्वजनिक दाह-संस्कार है

मध्य पूर्व की धरती आज बारूद नहीं, मानो जलती हुई मानवता की गंध से भर उठी है। अमेरिका, ईरान और इज़राइल के बीच यह अब केवल सीमाओं का टकराव नहीं—खामेनेई के नाम के साथ सिमटती ईरानी सत्ता ने दुनिया की हर धड़कन पर अनिश्चितता का ट्रिगर दबा दिया है। बस एक चिंगारी, और सभ्यता विश्व युद्ध की अंधी खाई में धकेली जा सकती है। शहर धधकती चिताओं में बदल रहे हैं, आसमान में मिसाइलें हैं, और ज़मीन पर मासूमों का लहू। इसके बावजूद वैश्विक मंचों पर शब्दों का धुआँ उठता है, संकल्पों की राख उड़ती है, पर साहस की ज्वाला कहीं नहीं दिखती। हमारी चुप्पी इस हिंसा की सबसे भरोसेमंद संरक्षक बन चुकी है। हम सुरक्षित कमरों में बैठकर दृश्य देखते हैं, यह भूलकर कि लपटें कभी दीवारों और नक्शों से नहीं डरतीं। सवाल गूंजता है—आख़िर हम चाहते क्या हैं? शांति, या ऐसा भविष्य जहाँ बच्चों की पहली आवाज़ रोने की नहीं, धमाकों की हो? मानवीय संकट का यह चेहरा किसी भी जीवित अंतःकरण को तोड़ देने के लिए पर्याप्त है। अस्पतालों में दवाओं से ज्यादा चीखें हैं, शरण शिविरों में उम्मीद से ज्यादा हताशा पसरी है। माताएँ अपने बच्चों को सीने से चिपकाए आग बरसाते आसमान को ताकती हैं, जैसे ईश्वर से उत्तर मांग रही हों—क्यों? इज़राइल की गलियों में सायरनों की तीखी पुकार है, ईरान के मुहल्लों में धुएँ का घना अंधकार, और अमेरिकी सैनिकों की आँखों में डगमगाता विश्वास। यह केवल भूगोल की जंग नहीं, यह आने वाले कल का योजनाबद्ध संहार है। शरणार्थियों की पंक्तियाँ सीमाएँ पार कर रही हैं, अर्थव्यवस्थाएँ काँप रही हैं, और पर्यावरण जहरीले धुएँ में घुट रहा है। फिर भी विश्व समुदाय की प्रतिक्रिया नपी-तुली, कूटनीति में कैद और संवेदना से रिक्त दिखाई देती है। क्या हमारी संवेदनाएँ इतनी सस्ती हो चुकी हैं कि आँकड़ों में बदलती लाशें हमें सामान्य लगने लगी हैं? हम सब अपने-अपने धर्मों को श्रद्धा से मानते हैं, अपने-अपने पवित्र ग्रंथों को आदर से पढ़ते और सुनते हैं। कोई कुरान की आयतों में रहमत खोजता है, कोई बाइबिल में प्रेम का आलोक, कोई तोराह में न्याय की पुकार, कोई गीता में कर्तव्य का मार्ग। हर ग्रंथ करुणा, संयम और मानवता की बात करता है। फिर यह कैसा रास्ता है जिस पर चलकर हम खून की धाराओं को बहने दे रहे हैं? यदि ईश्वर एक है, तो उसके नाम पर उसके बंदे इतने टुकड़ों में क्यों बंटे हैं? यदि प्रार्थनाएँ शांति के लिए उठती हैं, तो फैसले युद्ध के पक्ष में क्यों गिरते हैं? हम धर्म को अपनी पहचान की ढाल बना लेते हैं, पर उसके मूल संदेश को पीछे छोड़ देते हैं। आखिर हम चाहते क्या हैं—ईश्वर की सच्ची उपासना या सत्ता की प्यास में इंसानियत की आहुति? वैश्विक चुप्पी का यह अपराध समय की दीवारों पर दर्ज होकर रहेगा। संयुक्त राष्ट्र की बैठकों में शब्द गूँजते हैं, प्रस्ताव बनते हैं, पर धरती पर गोलियों की बरसात थमती नहीं। शक्तिशाली राष्ट्र अपने-अपने हितों की शतरंज बिछाए बैठे हैं; कोई तेल की चाह में, कोई प्रभुत्व की लालसा में, कोई सुरक्षा के आवरण में। मीडिया कुछ दिन कोलाहल करता है, फिर अगली सनसनी की ओर मुड़ जाता है। सोशल मीडिया पर हैशटैग उफान लेते हैं, पर बदलाव की ठोस लहर नहीं उठती। क्या 1945 के बाद जिस शांति का संकल्प लिया गया था, वह केवल इतिहास की किताबों तक सिमट गया? परमाणु आशंका की छाया फैल रही है, आतंक की जड़ें और गहरी हो रही हैं। हमारी चुप्पी इस धधकती आग को निरंतर हवा दे रही है। दुनिया की जवाबदेही केवल सत्ताओं की चौखट तक सीमित नहीं, वह हर नागरिक के विवेक पर भी टिकी है। हम चुनावी मंचों पर विकास की दुहाई देते हैं, पर युद्ध को कभी निर्णायक प्रश्न नहीं बनाते। सस्ते ईंधन पर मुस्कुराते हैं, पर उसकी कीमत में घुली रक्तरंजित राजनीति पर चुप्पी साध लेते हैं। हथियारों के सौदे बढ़ते हैं, और हम शेयर बाज़ार की छलांग पर तालियाँ बजा देते हैं। क्या सच में हम निर्दोष हैं? हर खरीदी गई सुविधा, हर टाला गया प्रश्न, हर अनदेखा अन्याय इस त्रासदी की जंजीर की एक कड़ी है। यदि शांति हमारी सच्ची चाह है, तो हमारी आवाज़ नीतियों के दरवाज़े तक पहुँचनी ही होगी।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आठ मार्च को कोल्हान में झारखंड की दिशा और दशा पर होगा महा सम्मेलन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड की दिशा और दशा को लेकर झारखंड का एक बड़ा आदिवासी संगठन कोल्हान रक्षा संघ आगामी आठ मार्च को पश्चिमी सिंहभूम तथा सरायकेला खरसावां जिले के तमाम मुंडा, माणकी, हाईकोर्ट के अधिवक्ताओं को लेकर बड़ा सम्मेलन करने जा रहा है । इस संबंध में संघ के अध्यक्ष डीबार जोंकों ने अपने आवासीय कार्यालय पांड्रा साली में आज एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया ।

उक्त बैठक में करीब चार दर्जन पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता ने भाग लिया । जहां संघ के अध्यक्ष डीबार जोंकों ने कहा कि विगत दो वर्षों के सफर में संघ ने सिंहभूम तथा सरायकेला जिले के कोने-कोने में जाकर विभिन्न मंचों में मेजबानी कर रहे संगठन के साथ खड़ा रहा ।जहां कोल्हान रक्षा संघ के लोगों को काफी इज्जत शोहरत मिली है । इस बाबत संघ ने अपने अनुभवी वक्ताओं , विचारकों, कानूनी विशारदों, अधिवक्ताओं, मानकी , मुंडा, दिऊरी, मांझी, परगना, ग्राम प्रधान, सरदार, नाया, पहान, डाकुओं को वहां बड़ी संख्या में आमंत्रित किया गया है तकी झारखंड के लोगों को उनका हक दिलाई जा सके । यह सम्मेलन दिन के 10 बजे से अपराह्न 5 बजे तक ग्राम सागंजाटा पास फूटवाल मैदान के समीप टोल ब्रीज के पास रखी गयी है । उन्होंने अगले 5 मार्च तक सभी को अपनी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने हेतु कहा है ।

अध्यक्ष ने कहा कि महत्वपूर्ण बात है कि आजतक झारखंड के लोगों को आर्थिक आजादी नहीं मिली है ।99 फीसदी आदिवासी अत्यंत गरीब है । उनको बुनियादी सुविधा तक नहीं पहुंच पा रही है । झारखंड बनकर बीस साल बाद उसकी दशा ऐसा क्यों ? घोर आश्चर्य की बात है कि अनेकों मुंडा, माणकी, डाकुआ ,मांझी परगना तक को सरकार जानती भी नहीं ।अनेक है जिनका कोल्हान अधीक्षक के कार्यालय में उनका कोई जानकारी तक नहीं है । क्या वास्तव में यही आदिवासियों का हाल होना चाहिए झारखंड में ? उन्होंने कहा कि कोल्हान की दिशा और दशा पर सबको जानना और सोचना चाहिए आखिर जनता को विगत पच्चीस वर्षों में मिला क्या ?

इस बैठक मे जहां अध्यक्ष डीबार जोंकों, मानसिग मेम्बरम , जयसिंह हेम्बम, सिद्धेश्वर सवैया , हरि शंकर सवैया, चंद्रमोहन चतंबा , सुखदेव मेम्बरम , सुमित्रा जोंकों पुनम मेम्बरम ,सोहित सिंह हेम्बरम, रविंद्र मंडल, धनपति सरदार, ,परेश नायक आदि अनेक गणमान्य जागरूक लोग उपस्थित थे ।

MINDSPA वेलफेयर सोसाइटी

अमृतसर वॉकाथॉन 2026: मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का संदेश

साहिल बेरी

अमृतसर। MINDSPA वेलफेयर सोसाइटी द्वारा VR Ambersar में अमृतसर वॉकाथॉन का सफल आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 200–300 नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत ऊर्जावान वार्म-अप सत्र से हुई, जिससे यह संदेश दिया गया कि शारीरिक सक्रियता और मानसिक स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री सिरिवेनेला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जिनकी गरिमामयी उपस्थिति ने सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता के इस अभियान को और सशक्त किया। चिकित्सा क्षेत्र की प्रतिष्ठित हस्तियों—डॉ. ए.आई.एस. भाटिया, डॉ. जे.पी.एस. भाटिया, डॉ. सिमर भाटिया, डॉ. सोहल, डॉ. राणा एवं डॉ. सेठी—की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। गुरु नानक देव विश्वविद्यालय (GNDU), पी.टी.यू., हिंदू सभा कॉलेज एवं जी.एम.सी. के विद्यार्थियों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई, जो युवाओं की जागरूकता और सहभागिता का प्रतीक रहा। यह पहल एकता, दृढ़ता और अमृतसर शहर की उस सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जो मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक को तोड़ने और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

फिक्की फ्लो अमृतसर द्वारा 'मेहनत दे रंग – फ्लो विरसा आर्टिजन मेला' के माध्यम से पंजाब की विरासत और उद्यमिता का उत्सव

साहिल बेरी

अमृतसर। फिक्की फ्लो अमृतसर ने 28 फरवरी 2026 को साड्डा पिंड, अमृतसर में 'मेहनत दे रंग – फ्लो विरसा आर्टिजन मेला' का सफल आयोजन किया। यह कार्यक्रम Year of Infinity के अंतर्गत एक विशेष पहल के रूप में आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य पंजाब की उद्यमशीलता भावना, सांस्कृतिक गौरव और अनुशासित परिश्रम का उत्सव मनाने के साथ-साथ महिला उद्यमिता और जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण को बढ़ावा देना था।

इस अवसर पर प्रसिद्ध अभिनेत्री Mona Singh, जिन्हें Kohrra और 3 Idiots में उनके उत्कृष्ट अभिनय के लिए जाना जाता है, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में अमृतसर से सांसद Gurjeet Singh Aujla की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण अभिनेत्री मोना सिंह के साथ आयोजित एक संवाद सत्र रहा, जिसमें उन्होंने प्रतिस्पर्धात्मक उद्योग में निरंतर प्रासंगिक बने रहने, स्वयं को पुनः स्थापित करने तथा दृढ़ता के महत्व पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने विभिन्न माध्यमों में अपने अनुभवों और अपने रेस्टोरेंट उद्यम की यात्रा पर भी चर्चा की, जिसने उपस्थित सदस्यों और अतिथियों को प्रेरित किया।

कार्यक्रम का आयोजन Sadda Pind में किया गया, जो पंजाब की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने वाला एक विशिष्ट स्थल है। यहाँ ग्रामीण महिलाओं द्वारा तैयार पारंपरिक व्यंजनों ने रोजगार सृजन और परंपराओं के संरक्षण का संदेश दिया। साथ ही फुलकारी, खेस, कालीन, मिट्टी कला, कठपुतली कला और हस्तशिल्प प्रदर्शनों ने पंजाब की जीवंत विरासत को दर्शाया। रौनक जुत्ती एवं फुलकारी द्वारा पारंपरिक हस्तनिर्मित जुत्तियों और कारीगरी का विशेष प्रदर्शन भी किया गया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहीं। ऊर्जावान भांगड़ा प्रस्तुति ने पंजाब की उत्सवधर्मिता को दर्शाया, जबकि कोच जगदीश सिंह के नेतृत्व में मिशन दीप गर्ल्स द्वारा प्रस्तुत गतका ने साहस, अनुशासन और परंपरा का प्रतीक प्रस्तुत किया।

फिक्की फ्लो अमृतसर ने इस अवसर पर अपने ग्रामीण एवं शहरी पहल प्रमुखों को भी सम्मानित किया, जो मेहंदी कला, मट्टी अचार एवं मटरी पहल, वेडिंग टेकअवे उद्यम, कैंडल मेकिंग और पैकेजिंग जैसे कौशल आधारित उद्यमों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ा रही हैं। 'मेहनत दे रंग – फ्लो विरसा आर्टिजन मेला' फिक्की फ्लो अमृतसर के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और नेतृत्वपूर्ण क्षण सिद्ध हुआ, जिसने विरासत और उद्यमिता के समन्वय के माध्यम से पंजाब की समृद्ध विरासत को उद्देश्य, गरिमा और दिशा के साथ आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

एक नूर एनजीओ द्वारा लावारिस शवों का अंतिम संस्कार व श्रद्धांजलि समारोह

साहिल बेरी

अमृतसर। गरीबी व कठिनाई के कारण जरूरतमंद व बेसहारा परिवारों की मदद करने तथा लावारिस शवों का अंतिम संस्कार करवाने वाली समाज सेवी संस्था एक सहारा (एनजीओ) ने विकास नगर स्थित गुरुद्वारा सिंह सभा में समाज सेवी कमल कुमार की द्वारा एक प्रभावशाली धार्मिक समारोह करवाया गया, जिसमें दिवंगत आत्माओं के अंतिम संस्कार व श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान स्थानीय निवासियों, राजनीतिक व समाज सेवी संस्थाओं व गुरु घर के प्रेमियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस धार्मिक समारोह के दौरान श्री सुखमनी साहिब जी के पाठ के भोग के पश्चात हजूरी रागी भाई दलजीत सिंह के कीर्तनी जत्थे ने गुरबाणी के सुंदर कीर्तन से संगत को निहाल किया। इस दौरान मेयर जतिंदर सिंह भाटिया, विरासत सेवा संगठन के जिलाध्यक्ष गौरव अग्रवाल, पार्षद नताशा गिल, पार्षद अमरजीत सिंह, प्रभ उप्पल ने खास तौर पर शामिल होकर गुरु घर में माथा टेका व दिवंगत आत्माओं को श्रद्धा के फूल अर्पित किए। उक्त नेताओं ने कहा कि एक सहारा एनजीओ द्वारा अंतिम संस्कार जैसी सेवा की मिसाल कहीं और देखने को नहीं मिलती। महंगाई के ज़माने में ऐसा शुभ काम करना हर किसी के बस की बात नहीं है। इस पवित्र काम के लिए तन-मन से एकजुट और मज़बूत होना बहुत ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि ऐसा काम कमल कुमार जैसे अच्छे दिल और मज़बूत इरादों वाले लोग ही कर सकते हैं। इस दौरान अलग-अलग नेताओं ने समाज सेवक कमल कुमार और उनकी टीम की तरफ से लावारिस लाशों के अंतिम संस्कार के लिए की जा रही कोशिशों और लागू की जा रही योजना के बारे में बताया और कहा कि पहले लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार करना और फिर उनकी रूहानी शांति के लिए धर्म और जाति की परवाह किए बिना धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करना एक अलग मिसाल से कम नहीं है।

इस दौरान गुरुद्वारा साहिब की मैनेजमेंट कमेटी और समाज सेवक कमल कुमार ने विशेष तौर पर पहुंचे लोगों को सम्मानित भी किया। इस मौके पर संगठन सेवक गगन धवन, सुखचैन सिंह, लखविंदर सिंह गुल्लू, बाबा वरिंदर सिंह, बलविंदर सिंह, बसंत सिंह, लखबीर सिंह, जसपाल सिंह पुतलीघर, दीपक सूरी, डॉ. हरीश शर्मा हीरा, नवदीप सिंह, लाली , प्रिंस, गोल्डी, जसनुर सन्नी, गुरमीत गीता, लाडी संधू, साबी, सन्नी बोपाराए, बलविंदर सिंह, हरभजन सिंह, जोगिंदर सिंह आदि मौजूद थे।

जीवन का निरन्तर अविरल चक्र, भौतिक लालसा क्षणिक है।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

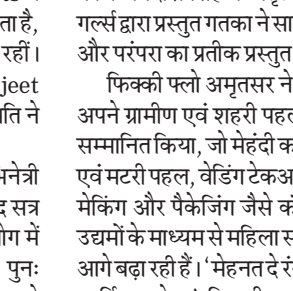

जीवन को एक विशाल वृक्ष के रूप में देखिए, जिसकी जड़ें शैशवावस्था में धंसी हैं और शीर्ष पर मृत्यु की अनिवार्यता विराजमान है। बचपन में रेंगना घुटनों के बल चलना, प्राथमिक, माध्यमिक, हाईस्कूल, कॉलेज होते हुए युवा शादी, करियर, धन-धान्य, समाज सेवा की चढ़ाई चढ़ता है, मगर जीवन, बीमारी, बुढ़ापा आते ही व्हीलचेयर पर असहाय सा नजर आता है। ये ही प्रकृति का नियम ओर मृत्यु नियति है, निश्चित है,

बाल्यकाल शिक्षा ग्रहण कर परिवार का सहारा बनता है, युवावस्था में नौकरी-शादी बंधन जोड़ती है, मध्य में पैसों की दौड़ समाज को जोड़ती है, किंतु वृद्धावस्था अकेलापन लाती है जहाँ शारीरिक कमजोरी सहारा मांगती है। अंतिम शिखर पर मृत्यु का स्मरण सताता है, कि भौतिक लालसा क्षणिक है, आध्यात्मिक संतुलन शाश्वत। योग-ध्यान जैसे भारतीय दर्शन इसी संतुलन की कुंजी सौंपते हैं।

आज के भागमभाग में जीवन का अनुभव संदेश देता है, जड़ें मजबूत रखें (परिवार-शिक्षा), सफलता के शिखर पर संयम अपनाएँ (करियर-समाज), शिखर पर नम्रता को स्वीकारें (बुढ़ापा-मृत्यु)। युवा शिक्षा ग्रहण करें, मध्यम आयु वाले पारिवारिक मूल्य निभाएँ, वृद्ध शांति अर्जित करें, यह चक्र जीवन को सार्थक बनाता है। मृत्यु अंत नहीं जीवन है।

झारखंड के सारंडा में आईईडी ब्लास्ट, कोबरा कमांडेन्ट अजय मल्लिक घायल

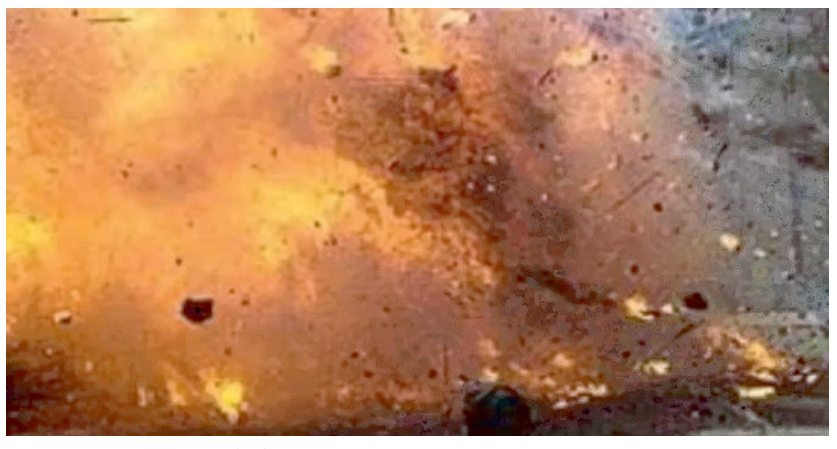

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, पश्चिमी सिंहभूम के छोटानागरा थाना क्षेत्र अंतर्गत सारंडा के मारंगपोंगा जंक्शन स्थित घने जंगल में नक्सलियों के खिलाफ सुरक्षा बल द्वारा चल रहे अभियान के दौरान आईईडी ब्लास्ट हो गया। माओवादियों द्वारा लगाए गए आईईडी की चपेट में आने से कोबरा के कमांडेंट अजय मलिक गंभीर रूप से घायल हो गए।

अभियान के दौरान कोबरा बटालियन के जवानों के द्वारा जंगल में काफी सतर्कता से आग बढ़ रहे थे ,इस क्रम में मंरागपोगा जंगल में माओवादियों के द्वारा लगाये गये आईईडी बम के चपेट में चपेट में कोबरा बाटालियन के सहायक कमांडेंट अजय मलिक आ गये।

पुलिस पदाधिकारी ने रांची संपर्क कर तत्काल हेलीकॉप्टर भेजने का आग्रह किया। जिससे घायल को बेहतर इलाज के लिए रांची ले जाया जा सके। हेलीकॉप्टर रांची से आकर कमांडेन्ट को लेगयी ।

इस संबंध में जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक अमित रेनू ने कहा कि सारंडा जंगल में माओवादियों के द्वारा सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने के लिए लगाए गए आईईडी बम के चपेट में आने से कोबरा बटालियन के एक सहायक कमांडर घायल हो गए हैं। उन्हें बेहतर इलाज के लिए एयरलिफ्ट कर रांची भेजा जा रहा है, जबकि सारंडा क्षेत्र में माओवादियों के विरुद्ध सर्च अभियान लगातार जारी है।

धालीवाल ने केजरीवाल और सिसोदिया से मुलाकात कर "आप" पंजाब इकाई की ओर से दी बधाई

साहिल बेरी

अमृतसर। – आम आदमी पार्टी के सूबाई मुख्य प्रवक्ता, विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री सरदार कुलदीप सिंह धालीवाल ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल तथा पंजाब मामलों के प्रभारी और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया से विशेष रूप से निजी मुलाकात की।

मुलाकात के दौरान उन्होंने दिल्ली की एक अदालत द्वारा सीबीआई की ओर से दर्ज कथित बेबुनियाद मामले में बाइज्जत बरी किए जाने के फैसले का स्वागत करते हुए उन्हें बुके भेंट किया और ₹आपx पंजाब इकाई की ओर से बधाई दी।

उन्होंने कहा कि अदालत द्वारा श्री केजरीवाल और श्री सिसोदिया की कट्टर ईमानदार राजनीति पर मुहर लगाए जाने से जहां पंजाब में मुख्यमंत्री सरदार भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली सरकार के स्वच्छ प्रशासन, व्यापक विकास, रोजगार और जनसुविधा योजनाओं को मजबूती मिलेगी, वहीं पंजाब में नशों के खिलाफ युद्ध और गैंगस्टरों के विरुद्ध चल रहे ऑपरेशन को भी पहले से अधिक ताकत मिलेगी। इसके साथ ही आम आदमी पार्टी की पंजाब इकाई के सभी नेताओं और वॉलंटियरों में नए उत्साह और ऊर्जा का संचार होगा।

मुलाकात के उपरांत बातचीत के दौरान धालीवाल ने कहा कि अदालत द्वारा श्री केजरीवाल और श्री सिसोदिया को बाइज्जत बरी किए जाने से आम आदमी पार्टी की ईमानदार राजनीति को एक सुनियोजित साजिश के तहत राष्ट्रीय स्तर पर बदनाम करने की कोशिश करने वाली विरोधी पार्टी भाजपा को करारा झटका लगा है।

उन्होंने कांग्रेस, भाजपा और अकाली दल की वरिष्ठ नेतृत्व द्वारा की जा रही अनावश्यक टिप्पणियों की आलोचना करते हुए कहा कि अदालत के इस सम्मानजनक और ऐतिहासिक फैसले से स्पष्ट है कि आगामी वर्ष 2027 में होने वाले पंजाब विधानसभा चुनावों में संभावित हार को देखकर ये विपक्षी दल बौखलाए हुए हैं। धालीवाल ने सवाल उठाया कि यदि विभिन्न मुकदमों का सामना कर रहे अन्य दलों के वरिष्ठ नेताओं के पक्ष में अदालतें निर्णय देकर लोकसभा सदस्यता बहाल करें या अन्य मामलों में राहत दें तो वे फैसले मीठे और सत्य की जीत कहलाते हैं, लेकिन यदि ₹आपx नेतृत्व के खिलाफ राजनीतिक बदले की भावना से बनाए गए केस रद्द कर दिए जाएं तो वही फैसले कड़वे क्यों लगते हैं? उन्होंने श्री केजरीवाल और श्री सिसोदिया के पक्ष में आए इस फैसले को शुद्ध सोने की तरह सौ प्रतिशत खरा बताते हुए कहा कि सत्य को परेशान किया जा सकता है, पराजित नहीं किया जा सकता। कैप्शनः आम आदमी पार्टी के सूबाई मुख्य प्रवक्ता एवं विधायक द्वारा श्री अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया को बाइज्जत बरी होने पर निजी मुलाकात के दौरान बुके भेंट कर ₹आपx पंजाब की ओर से बधाई देते हुए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023